मैं तो तुझे खाऊँगा

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title : Mein To Tujhe Khaaoonga (I Will Eat you)
Cover Page picture : Hungry Lion
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

मैं तो तुझे खाऊँगा 7

1 जादुई काशीफल 9

2 गाने वाला काशीफल 16

3 नुंग ग्वामा 24

4 एक आँख 32

5 तीन बिल्ली बकरे ग्रफ़ 36

6 घोंघा और चीता 44

7 चीता और मेंढक 49

8 गिरगिट और चीते की लड़ाई 54

9 चाचा भेड़िया 63

10 भूखा भेड़िया 68

11 किस्टल का मुर्गा 72

12 भेड़िया और तीन लड़कियाँ 79

13 गीदड़ और शेर 84

14 एक भयानक सूअर 88

15 तीन बड़े खरगोश 95

16 कायोटी और कछुआ 100

17 आदमी और साँप 105

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयीं है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

मैं तो तुझे खाऊँगा

"मैं तो तुझे खाऊँगा" की कहानियॉ अधिकतर दो तरीकों की हैं। पहली तो वे जिनमें जानवरों ने अपने बचाने वालों को अपनी जान बचाने के बाद खाने का प्रस्ताव रखा है। पर अक्सर ही ऐसा हुआ है कि या तो उस आदमी या जानवर ने अपनी अक्लमन्दी से अपनी जान बचा ली है या फिर उस जानवर के खाने से पहले कोई न कोई आ गया है और उसने अपनी अक्लमन्दी से उसकी जान बचा ली है। इनमें दूसरे तरीके की कहानियॉ ऐसी हैं जिनमें बस कोई भी ज़्यादा ताकतवर जानवर किसी दूसरे जानवर से कहता है कि "मैं तो तुझे खाऊँगा"। इस खाने का कोई खास कारण नहीं है बस यही कि मुझे तुझे खाना है।

इनमें से पहली तरीके की कहानिया "एक कहानी कई रंग" नाम की सीरीज़ की 17वीं पुस्तक "आदमी और शेर जैसी कहानियॉ"[1] नाम की पुस्तक में संग्रहीत हैं। इस पुस्तक में दूसरी प्रकार की कुछ लोक कथाओं का संग्रह है जिनमें बस जानवर यों ही किसी दूसरे को खाने की इच्छा प्रगट करते हैं।

ऐसी कई लोक कथाऐं सुनने में आती हैं और ये कई समाजों में कही सुनी जाती हैं। तो लो ऐसी कुछ लोक कथाऐं पढ़ो और देखो कि अगर तुम लोगों को इन परिस्थतियों का सामना करना पड़ जाये तो तुम क्या करोगे। जैसे भी करो जो कुछ भी करो हमको जरूर लिखना कि तुमने क्या सोचा।

[1] Like Lion and Man Tales published under the Series Title "One Story Many Colors" No 17. It may be obtained from hindifolktales@gmail.com as e-book free of charge.

1 जादुई काशीफल[2]

मैं तो तुझे खाऊँगा की लोक कथाओं की यह पहली लोक कथा अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है। बच्चों, बच्चे तो जिद्दी होते ही हैं तो देखो कि एक बच्चे की जिद ने क्या क्या गुल खिलाये।

उत्तरी नाइजीरिया में एक स्त्री अपनी बेटी फुरैरा[3] के साथ शाम को घर लौट रही थी। सुबह से शाम तक के काम के बाद अब उसे घर पहुँचने की जल्दी थी इस लिये वह जल्दी जल्दी घर की तरफ जा रही थी।

फुरैरा भी उसके साथ रेत से भरे रास्ते पर कूदती फाँदती खुशी से भागी चली जा रही थी।

एकाएक फुरैरा रुक गयी। उसको सड़क के पास घास के बीच में एक छोटा सा काशीफल[4] दिखायी दे गया था। वह चिल्लायी — "माँ, देखो तो यह कितना सुन्दर काशीफल है, यह मुझे तोड़ दो न।"

माँ क्योंकि आगे आगे चल रही थी, पलट कर लौटी और काशीफल देखा तो बोली — "बेटी, अभी इसे रहने दो, यह अभी

[2] Magical Pumpkin – a folktale from Nigeria, Western Africa.
[3] Phurera – the name of the daughter
[4] Pumpkin – a kind of vegetable – see its picture above.

छोटा है। जब यह बड़ा हो जायेगा तब हम इसे तोड़ेंगे क्योंकि तब इसकी भाजी भी अधिक बनेगी।

तुम अगर चाहो तो इसके पास में लगा यह बड़ा वाला काशीफल अभी तोड़ लेते हैं। हम इसे आज रात के खाने में बना लेंगे।" यह कहते हुए उसने पास में लगा वह बड़ा काशीफल तोड़ लिया और आगे चल दी।

पर फुरैरा को तो अपना वाला छोटा वाला काशीफल चाहिये था। वह रो पड़ी और उसी छोटे वाले काशीफल के लिये जिद करने लगी।

उसकी माँ ने उसे बहुत समझाया कि इतना छोटा काशीफल तोड़ना बेवकूफी है। कुछ दिन बाद जब वह बड़ा हो जायेगा तब तोड़ लेंगे परन्तु वह न मानी।

माँ भी उसकी बात को सुना अनसुना कर आगे चल दी। बच्ची भी रोती हुई माँ के पीछे पीछे घर पहुँची।

रात को फुरैरा ने खाना खाने से मना कर दिया। पिता अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था सो उसके पिता ने पूछा — "क्या बात है आज मेरी बिटिया क्यों नाराज है?"

माँ ने जवाब दिया — "आज जब हम लोग घर वापस लौट रहे थे तो इसने एक छोटा सा काशीफल देख लिया उसी के लिये जिद कर रही है। मैंने उसको छोटा होने की वजह से नहीं तोड़ा इसी लिये रो रही है।"

पिता ने कहा — "रो मत बेटी, कल सुबह ही हम अपनी बेटी को वह काशीफल ला देंगे। आजा, अब खाना खा ले।" फुरैरा ने तुरन्त ही अपने ऑसू पोंछ लिये और अपने पिता के साथ खाना खाने बैठ गयी।

सुबह वह सबेरे ही उठ गयी और फिर से काशीफल के लिये जिद करने लगी। आखिर उसकी मॉ को अपना सारा काम छोड़ कर काशीफल लाने जाना ही पड़ा।

काशीफल अभी भी उसी जगह लगा हुआ था। मॉ ने जल्दी से काशीफल तोड़ कर फुरैरा के हाथ में दे दिया और घर की तरफ वापस लौट पड़ी।

पर यह क्या? काशीफल फुरैरा के हाथ से नीचे जमीन पर गिर पड़ा और उसके पीछे पीछे चलने लगा। अब क्या था फुरैरा आगे आगे और काशीफल उसके पीछे पीछे।

फुरैरा ने एक नाला कूद कर पार किया तो काशीफल ने भी उसके ऊपर से कूद लगा दी। फुरैरा ने इस प्रकार का चलता फिरता काशीफल पहले कभी नहीं देखा था।

वह खुशी से चिल्लायी — "देखो न मॉ मेरे इस काशीफल को किस तरह यह मेरे पीछे पीछे चल रहा है। तुमने इस काशीफल को मेरे लिये तोड़ा कितना अच्छा किया। तुम कितनी अच्छी हो मॉ।"

यह सुन कर तो मॉ आश्चर्य में पड़ गयी। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो सचमुच ही काशीफल फुरैरा के पीछे पीछे लुढ़कता हुआ चला आ रहा था।

उसने भी पहले कभी चलता फिरता काशीफल नहीं देखा था सो इस काशीफल को इस तरह दौड़ते देख कर उसे भी बहुत आश्चर्य हो रहा था। पर यह काशीफल तो सचमुच ही लुढ़कता हुआ चला आ रहा था।

मॉ ने जंगल से घर तक कई बार उसको अपने हाथ में उठाने की कोशिश की पर वह बार बार उसके हाथ से फिसल जाता और उन लोगों के पीछे पीछे चलने लगता।

फुरैरा अपना काशीफल पा कर बहुत खुश थी। वह दौड़ती हुई अपने घर के ऑगन में बैठे अपने पिता से लिपट गयी और फिर घर के सभी लोगों से बोली — "आओ और आ कर सभी लोग मेरा काशीफल देखो। यह जंगल से घर तक सारे रास्ते मेरे पीछे पीछे चल कर आया है।"

यह सुन कर सभी लोग वहॉ उस अजीब काशीफल को देखने के लिये दौड़े आये।

काशीफल अभी भी जमीन पर इधर उधर लुढ़क रहा था। जैसे ही किसी ने उसको अपने हाथ में उठाने की कोशिश की वह उसी के हाथ से फिसल गया।

घर में काशीफल का एक अजीब सा तमाशा बन गया। सभी उस चलते फिरते काशीफल को आश्चर्य से देख रहे थे।

पर फुरैरा का पिता यह सब देख कर खुश नहीं था। वह बहुत चिन्तित था क्योंकि उसको मालूम था कि ऐसे जादुई काशीफल के अन्दर शैतान हुआ करता है और अब वह पछता रहा था कि उसने फुरैरा की मॉ को काशीफल तोड़ने के लिये क्यों कहा।

पर अब क्या हो सकता था अब तो वह केवल उससे बचने की तरकीब ही सोच सकता था।

इतने में काशीफल बोला — "फुरैरा, फुरैरा, मुझे भूख लगी है मुझे खाने के लिये मॉस चाहिये।" यह कह कर वह फुरैरा की एड़ी काटने लगा।

फुरैरा के पिता ने फुरैरा से कहा — "बेटी, जहॉ भेड़ें बॅधी हैं तुम वहॉ भाग जाओ। काशीफल भी तुम्हारे पीछे पीछे वहीं भाग जायेगा।"

फुरैरा यह सुनते ही भेड़ों के बाड़े की तरफ भागी तो काशीफल भी फुरैरा के पीछे पीछे बाड़े में घुस गया और उसने भेड़ों को साबुत का साबुत ही निगलना शुरू कर दिया।

फुरैरा बाड़े से घर वापस आयी तो काशीफल भी भेड़ों को खा कर घर वापस आ गया और बोला — "फुरैरा, मुझे अभी और मॉस चाहिये, मैं अभी और भूखा हूॅ।" और ऐसा कह कर वह फुरैरा के टखने की तरफ बढ़ा।

अबकी बार फुरैरा के पिता ने कहा — "फुरैरा, भाग जा जहाँ गायें बँधी हैं।" फुरैरा तुरन्त ही गायों के बाड़े की तरफ भाग गयी। काशीफल भी उसके पीछे पीछे चल दिया।

जब तक फुरैरा घर वापस आयी, काशीफल भी सारी गायें खा कर घर वापस आ गया और उसकी टाँग की तरफ बढ़ते हुए बोला — "मुझे अभी और माँस चाहिये फुरैरा।"

अबकी बार फुरैरा के पिता ने बड़े दुख के साथ कहा — "फुरैरा, तुम तुरन्त ही ऊँटों की तरफ भाग जाओ।"

फुरैरा यह सुनते ही तुरन्त ऊँटों की तरफ भाग गयी पर जब तक वह घर वापस आयी काशीफल भी ऊँटों को खा कर घर वापस आ गया था।

अबकी बार काशीफल फुरैरा के घुटने की तरफ बढ़ता हुआ बोला — "मुझे अभी और माँस चाहिये फुरैरा।"

इस बार फुरैरा को गुस्सा आ गया़ वह चिल्ला कर बोली — "अब और माँस कहाँ है? तुमने सारा माँस तो खा लिया।"

काशीफल बोला — "तब अब मैं तुम्हें खाऊँगा।" और यह कह कर उसने फुरैरा के घुटने पर बहुत ज़ोर से काटा।

पिता ने तुरन्त ही काशीफल में अपने पैर से एक ज़ोर की ठोकर मारी मगर काशीफल पर तो कोई असर ही नहीं पड़ा।

इतने में अन्दर से उनकी पालतू बकरी आ गयी और उसने अपने सींगों से काशीफल में एक उछाल मारी। काशीफल नीचे तो

जा गिरा पर गुस्से में भर कर वह बकरी की तरफ दौड़ा और बोला — "मुझे और मॉस चाहिये।"

इस बार बकरी ने अपने सींगों से पूरी ताकत के साथ उसको फिर से एक उछाल मारी तो काशीफल एक ज़ोर की आवाज के साथ जमीन पर गिर गया और फट गया।

और यह क्या? काशीफल के अन्दर से सारे जानवर ऐसे के ऐसे बाहर आ गये जैसे उसने खाये थे। पिता ने सारे जानवर उनकी जगहों पर बॉध दिये।

फुरैरा अपनी बकरी को बहुत प्यार कर रही थी क्योंकि उसने उसकी जान बचायी थी। मॉ ने उस टूटे काशीफल के सारे टुकड़ों को जला कर राख कर दिया।

तो यह करामात दिखायी फुरैरा की जिद ने और उसके जादुई काशीफल ने।

2 गाने वाला काशीफल[5]

मैं तो तुझे खाऊँगा की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के ईरान देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक बुढ़िया अपने एक बड़े सफेद कुत्ते के साथ अकेली रहती थी। एक दिन उसने सोचा कि वह पहाड़ के ऊपर अपनी पोती[6] से मिलने जायेगी।

अगर वह अपने कुत्ते को अपने साथ ले जाती तो वह किसी मुसीबत में फॅस जाता इसलिये उसने उसे घर पर ही छोड़ दिया और अकेली ही उससे मिलने चल दी।

जाते समय उसने अपने कुत्ते से कहा — "तुम घर पर ही रहो और घर की देखभाल करो मैं ज़रा अपनी पोती से मिल कर आती हूँ।" और यह कह कर वह पहाड़ों के रास्ते पर चली गयी।

---

[5] The Singing Pumpkin – a folktale from Iran, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=96
Picture permission from www.KelsyParks.com

[6] Translated for the word "Grand-daughter" – she may be a daughter's daughter or the son's daughter

जब वह पहाड़ के ऊपर जा रही थी तो रास्ते में एक गुफा पड़ी। उसने उस गुफा के अन्दर से एक अजीब सी आवाज सुनी।

वह आवाज सुन कर वह डर गयी और उसने जल्दी से उस गुफा के पास से गुजर जाना चाहा पर जैसे ही वह उस गुफा के पास से गुजरी तो उसमें से एक जिन्न निकल आया।

कुछ जिन्न तो दिखायी नहीं देते पर यह जिन्न तो बहुत ही बदसूरत था और ऐसा राक्षस दिखायी देता था जो आदमियों को खाता है। कुछ जिन्न तो अच्छे होते हैं पर यह जिन्न बहुत ही नीच था। कुछ जिन्न तो आपकी इच्छा पूरी करते हैं पर यह वैसा जिन्न नहीं था।

यह जिन्न तो बहुत ही नीच दिखायी दे रहा था। वह उस बुढ़िया की तरफ भयानक नजरों से देख रहा था और अपने होठ चाट रहा था।

कुछ जिन्न लोगों को छोड़ देते हैं और उनको अपने रास्ते जाने देते हैं पर यह जिन्न अपनी गुफा से बाहर निकल कर उस बुढ़िया के रास्ते में खड़ा हो गया और बोला — "मुझे भूख लगी है। मैं तुम्हें खाऊँगा।"

बुढ़िया बोली — "भूख तो मुझे भी लगी है, मैं भी भूखी हूँ। इसी लिये मैं अपनी पोती के घर जा रही हूँ क्योंकि वह केक और दूसरे खाने सब कुछ बहुत अच्छे बनाती है। तुम बताओ तुम क्या खाओगे?"

जिन्न अपनी बहुत ही भयानक आवाज में बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — "हा हा हा। मैं तो तुम्हें खाऊँगा ओ बुढ़िया।" बुढ़िया को लगा कि वह उससे मजाक नहीं कर रहा था।

बुढ़िया बोली — "पर मुझे खाने से तो तुम्हारा पेट भरेगा नहीं। तुम मुझे पहाड़ के ऊपर मेरी पोती के घर क्यों नहीं जाने देते? पहाड़ से नीचे ऊपर आने जाने का यही तो एक रास्ता है सो मैं यहीं से अपने घर वापस जाऊँगी। जब तक मैं वहाँ से खा पी कर मोटी हो कर आती हूँ तब तक तुम मेरा यहीं इन्तजार करो।"

जिन्न बोला — "यही ठीक रहेगा, मैं यही करूँगा। तुम जल्दी ऊपर जाओ और खा पी कर मोटी हो कर आओ। तब तक मैं तुम्हारा यहीं इन्तजार करता हूँ। जब तुम वापस आओगी तब मैं तुमको खा लूँगा।"

बुढ़िया उस पहाड़ी सड़क पर ऊपर चढ़ती चली गयी और अपनी पोती के घर आ पहुँची। उसकी पोती उसको देख कर इतनी खुश हुई कि उसने अपनी दादी को केक, कबाब, रोटी और बहुत सारे अच्छे अच्छे खाने खिलाये।

जब तक उस बुढ़िया ने पेट भर कर खाना खाया तब तक उसके गाल और पेट दोनों कुछ ज़्यादा ही गोल हो गये थे।

बुढ़िया बोली — "बेटी इतना अच्छा खाना खा कर अब मैं घर नहीं जाना चाहती पर मैं अपना बड़ा सफेद कुत्ता घर पर ही छोड़

आयी हूँ। उसको भी भूख लग रही होगी इसलिये मुझे घर तो जाना ही पड़ेगा।

यहाँ आते समय रास्ते में एक गुफा पड़ी थी। मैं घर जाते समय उस गुफा के पास से गुजरने में डरती हूँ क्योंकि उस गुफा में एक जिन्न रहता है। वह कोई अच्छा जिन्न नहीं है जो दूसरों की इच्छा पूरी करे। वह तो भूखा जिन्न है और मुझे खाना चाहता है।"

बुढ़िया की पोती बोली — "दादी, मेरे दिमाग में एक बात आयी है।"

कह कर वह अपने बागीचे में गयी और वहाँ से एक बहुत ही बड़ा काशीफल तोड़ लायी। उसने उस बड़े से काशीफल का ऊपरी हिस्सा काट दिया।

फिर उसने उसको खोखला किया और अपनी दादी से कहा — "तुम इसके अन्दर घुस जाओ दादी और फिर मैं इसका ऊपरी हिस्सा तुम्हारे ऊपर रख दूँगी। इस काशीफल को मैं लुढ़का दूँगी और इस तरह तुम इस काशीफल के अन्दर लुढ़कती हुई घर चली जाना।

वह जिन्न तुम्हें कभी पहचान ही नहीं सकेगा कि इस लुढ़कते हुए काशीफल के अन्दर तुम हो। और इसके अलावा जिन्नों को काशीफल वैसे अच्छे भी नहीं लगते।"

वह बुढ़िया उस काशीफल के अन्दर घुस गयी और उसकी पोती ने उस काशीफल का ऊपरी हिस्सा उसके ऊपर कस कर लगा

कर उस काशीफल को बन्द कर दिया। फिर उसने उस काशीफल को उस पहाड़ी रास्ते पर धीरे से लुढ़का दिया।

पहले तो वह काशीफल रास्ते पर धीरे धीरे लुढ़का तो बुढ़िया ने गाना गाया — "लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। बम्प बम्प कर के लुढ़कता चला जा।"

जिन्न वहीं अपनी गुफा के सामने बैठा उस बुढ़िया के लौटने का इन्तजार कर रहा था। बुढ़िया तो उसे दिखायी नहीं दी, हॉ एक गाता हुआ काशीफल रास्ते पर लुढ़कता हुआ जाता जरूर नजर आया।

पर जिन्न को तो काशीफल पसन्द ही नहीं था सो उसने उसे जाने दिया। वह तो वैसे भी उस बुढ़िया की तलाश में था काशीफल से उसे क्या लेना देना था।

तभी रास्ता ज़्यादा और और ज़्यादा ढालू हो गया और काशीफल और ज़्यादा तेज़ी से लुढ़कने लगा। काशीफल के तेज़ी से लुढ़कने के साथ साथ बुढ़िया का गाना भी और तेज़ और और ऊँचा होता गया।

"लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। बम्प बम्प कर के लुढ़कता चला जा।"

जिन्न लुढ़कते हुए काशीफल को बड़े ध्यान से देख रहा था। उसने उसको गाते हुए भी सुना। फिर उसको लगा कि काशीफल तो गा नहीं सकते। ऐसा लगता है कि वह बुढ़िया ही मुझे बेवकूफ बना रही है।

वह जिन्न अपनी पूँछ पर बैठ गया और अपने दोनों नंगे पाँव दोनों तरफ फैला लिये और जब वह काशीफल लुढ़कता हुआ उसकी गुफा के पास तक आया तो उसने उसको अपने पाँवों से रोक लिया।

उसे रोक कर उसने पूछा — "तुम क्या हो?"

बुढ़िया बोली — "मैं गाने वाला काशीफल हूँ।"

जिन्न बोला — "नहीं तुम गाने वाला काशीफल नहीं हो। तुम तो वह बुढ़िया हो जिसको मैंने खाने का वायदा किया था।"

बुढ़िया फिर बोली — "नहीं, मैं गाने वाला काशीफल हूँ। मुझे नीचे ढकेल दो और मुझे नीचे जाने दो।"

जिन्न बोला — "काशीफल नहीं गा सकते। तुम जल्दी बाहर निकलो ताकि मैं तुम्हें खा लूँ।"

बुढ़िया बोली — "मैं बाहर नहीं निकल सकती।"

जिन्न बोला — "हाँ हाँ, तुम बाहर निकल सकती हो।"

बुढ़िया बोली — "नहीं, मैं जब तक बाहर नहीं निकल सकती जब तक तुम जादू के शब्द नहीं कहते।"

जिन्न बोला — "ठीक है। मेहरबानी कर के बाहर आ जाओ और धन्यवाद।"

बुढ़िया बोली — हॉ, ये तो बहुत ही अच्छे जादू के शब्द हैं पर मुझे बाहर निकालने से पहले तुमको अभी कुछ और जादू के शब्द कहने होंगे। तुमको कहना होगा – "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।"

जिन्न बोला — "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।"

बुढ़िया बोली — "तुमको ये शब्द ऊँची आवाज में और जल्दी जल्दी बोलने होंगे।"

सो जिन्न ने उन शब्दों को पहले से ऊँची आवाज में और और तेज़ी से कहा — "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।" पर काशीफल तो फिर भी नहीं खुला और बुढ़िया भी बाहर नहीं आयी।

जिन्न ने काशीफल को हिलाते हुए कहा — "ये जादू के शब्द तो काम नहीं कर रहे और मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है।"

बुढ़िया बोली — "इन शब्दों को और ज़ोर से और और तेज़ी से कहो – "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते"।"

सो जिन्न ने फिर से उन शब्दों को और ज़ोर से और और तेज़ी से बोला। बुढ़िया बोली — "हॉ अब ठीक है। एक बार और इन शब्दों को ऊँची आवाज़ में और तेज़ी से बोलो तो शायद मैं बाहर निकल पाऊँगी।"

सो जिन्न फिर से चिल्लाया "यहॉ आओ ओ मेरे सफेद कुत्ते।"

तभी उसने एक बड़ा सफेद कुत्ता भाग कर आता हुआ सुना। उस कुत्ते के आने की आवाज सुन कर जिन्न वहाँ से दूर भाग गया।

कुत्ते ने उस काशीफल को एक हल्का सा धक्का दिया और वह काशीफल लुढ़कता हुआ उस बुढ़िया को उस काशीफल के अन्दर लिये हुए उसके घर तक ले गया।

वह बुढ़िया सारे रास्ते गाती रही — "लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। लुढ़क मेरे काशीफल, लुढ़कता चला जा। बम्प बम्प कर के लुढ़कता चला जा।"

जब वे घर पहुँचे तो बुढ़िया उस काशीफल में से सही सलामत बाहर निकल आयी। इस तरह से वह बुढ़िया उस जिन्न को चकमा दे कर अपने घर सही सलामत वापस आ गयी।

3 नुंग ग्वामा[7]

मैं तो तुझे खाऊँगा की लोक कथाओं की यह लोक कथा एशिया के चीन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत दिनों पहले की बात हे कि चीन में एक स्त्री ने अपने माता पिता के लिये चावल के कुछ केक बनाये। वह उनको उनके घर देने जाना चाहती थी।

उसके माता पिता काफी दूर रहते थे। उनके घर का रास्ता एक अँधेरे घने बाँस के जंगल से हो कर जाता था। लोगों का कहना था कि वहाँ नुंग ग्वामा नाम का एक बड़ा राक्षस[8] रहता था।

वे उसके बारे में यह भी कहते थे कि वह सब तरह के जानवर और आदमी खाता था। पहले वह उनकी हड्डियाँ तोड़ देता था और उन सबको तोड़ कर फिर उनका सब कुछ खा जाता था – बाल, हड्डी हर चीज़।

उस स्त्री ने पहले कभी राक्षस देखा नहीं था पर फिर भी वह जब उस जंगल में से जाने लगी तो उस जंगल में से जल्दी जल्दी चली। वह वह बाँस का जंगल करीब करीब सारा पार कर गयी थी कि उस जंगल के आखीर में वह राक्षस उसके सामने कूद कर आ खड़ा हुआ।

---

[7] Nung Gwama: a Chinese Folktale – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=208 Retold by Mike Lockett.

[8] Translated for the word “Monster”

उसका शरीर बैल का था और उसका सिर इतना बड़ा था जितना कि कोई ओवन[9]। वह अपने दाँत पीस रहा था और अपने भयानक पंजे आगे की तरफ बढ़ा कर चलता चला आ रहा था। चलते समय उसके बड़े बड़े पैर फ्लिप फ्लौप फ्लिप फ्लौप की आवाज कर रहे थे।

वह बोला — "आर्ग आर्ग, मुझे वह चावल की केक दो मुझे वह खाने हैं।"

वह स्त्री डर गयी पर फिर भी बोली — "नहीं ये केक तो मेरे माता पिता के लिये हैं मैं इनको तुमको नहीं दे सकती।"

भयानक नुंग ग्वामा बोला — ठीक है ठीक है। मान लिया कि माता पिता बहुत जरूरी होते हैं पर आज रात मैं तुम्हें खाने आ रहा हूँ।"

वह स्त्री बहुत डरी हुई थी सो उसने उसे वह केक उसे दे दिये और घर वापस चली गयी पर सारे रास्ते वह डर के मारे काँपती ही रही। वह चलती जा रही थी और कहती जा रही थी —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

उसी रास्ते से एक और आदमी जा रहा था। उसने जब यह सुना तो उसके मुँह से निकला — "ओह मेरे भगवान।"

[9] An oven is a thermally insulated chamber used for the heating, baking or drying of a substance, and most commonly used for cooking. Kilns and furnaces are special-purpose ovens, used in pottery and metalworking, respectively.

फिर वह उस स्त्री से बोला — "यह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा जाता है। तुम ये सुई और पिनें रख लो। तुम इनको अपने दरवाजे के ताले के पास रख देना। हो सकता है कि वह अपनी उंगलियाँ उसमें घुसाये तो शायद इनके चुभने के दर्द की वजह से वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।"

कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

उधर से एक किसान जा रहा था। यह सुन कर वह भी बोला — "ओह मेरे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा लेता है।"

वह अपनी गाड़ी में सूअर की टट्टी की खाद धकेलता चला जा रहा था। उसने अपनी गाड़ी में से सूअर की एक टोकरी खाद उस स्त्री को दी और कहा — "लो तुम यह खाद ले जाओ और इसको अपने दरवाजे के पास रख देना। अगर उसके हाथ इससे गन्दे हो जायेंगे और उनमें बदबू आ जायेगी तो शायद वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।" कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

तभी वहाँ से एक साँप बेचने वाला जा रहा था। उस स्त्री की आवाज सुन कर वह भी बोला — "ओह मेरे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा लेता है।"

उसकी झोली में कई साँप थे। उसने उनमें से दो साँप निकाले और उस स्त्री को देते हुए कहा — "लो तुम ये दो साँप ले जाओ और इनको अपने हाथ धोने के बर्तन के पास रख देना। हो सकता है कि नुंग ग्वामा अपने खाद लगे हाथ धोना चाहे तो ये साँप उसको काट लेंगे। तो शायद वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।"

कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

तभी वहाँ से एक मछियारा जा रहा था। उस स्त्री की आवाज सुन कर वह भी बोला — "हे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा लेता है।"

उसने अपने पास से उस स्त्री को दो काटने वाली मछलियाँ दे कर कहा — "इन मछलियों को किसी हल्के गर्म पानी की बालटी में रख देना। अगर नुंग ग्वामा को साँप काटेगा तो हो सकता है कि वह गर्म पानी में अपने हाथ रखना चाहे तब यह मछली उसे काट लेगी। इससे शायद वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।"

कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

तभी वहॉ से एक अंडा बेचने वाला जा रहा था। उस स्त्री को सुन कर उसके मुँह से भी निकला — "हे मेरे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियॉ तक खा जाता है।"

उसने उस स्त्री से कहा — "लो तुम मेरे ये कुछ अंडे ले लो और इनको गर्म राख में रख देना। अगर सॉप और मछली उसको काटेंगे तो उसकी उँगलियों में से खून निकल आयेगा।

उस समय शायद वह अपना खून रोकने के लिये उनको गरम राख में रखना चाहे तो ये अंडे फूट कर उसके चेहरे पर बिखर जायेंगे जो उसके चेहरे को तकलीफ पहुँचायेंगे। तब शायद वह चला जाये।"

स्त्री बोली — "हो सकता है कि वह चला जाये और अगर वह नहीं गया तो।"

कह कर वह स्त्री फिर रोने लगी और बोली —

ओह यह भयानक नुंग ग्वामा यह भूखा नुंग ग्वामा आज मुझे खाने मेरे घर आ रहा है

तभी एक आदमी उधर से चक्की के बड़े बड़े पाट ले कर जा रहा था जो अनाज पीसने के काम आते हैं।

उसने जब उस स्त्री को यह कहते सुना तो उसके मुँह से भी निकला — "ओह मेरे भगवान वह भयानक नुंग ग्वामा तो हड्डियाँ तक खा जाता है।"

फिर उसने उस स्त्री से कहा — "लो इनमें से चक्की का एक पाट तुम लुढ़काती हुई अपने घर ले जाओ। घर ले जा कर इसको एक रस्सी के सहारे अपने बिस्तर के ऊपर लटका देना।

जब वह तुम्हारे घर आये तो उसको इस पत्थर के नीचे खड़े होने के लिये कहना और जब वह इसके नीचे खड़ा हो जाये तो इसकी रस्सी काट देना। बस यह पत्थर उसके ऊपर गिर पड़ेगा और वह मर जायेगा।"

उस स्त्री ने सोचा शायद नुंग ग्वामा इस पत्थर के नीचे दब कर मर जाये। पर अगर वह इसके नीचे भी आ कर न मरा तो। पर फिर भी वह उस पत्थर को अपने घर ले आयी।

घर आ कर उसने सुइयाँ अपने घर के दरवाजे के पास रखीं। बदबूदार खाद सुइयों के पास डाला। साँप उसने अपने हाथ धोने वाले टब में डाले और मछली गर्म पानी में डालीं। अंडे उसने गर्म राख में रखे और वह चक्की का पाट उसने अपने बिस्तर के ऊपर रस्सी से लटका दिया।

यह सब कर के उसने अपना लैम्प बुझा दिया और नुंग ग्वामा का इन्तजार करने लगी।

फ्लिप फ्लौप फ्लिप फ्लौप। उसने नुंग ग्वामा के बड़े बड़े पैरों की आवाज सुनी।

"आर्ग, ओ औरत तू तो बड़ी नीच है। तूने ये सुइयॉ यहॉ इसलिये रखी हैं ताकि वे मेरी उँगलियों में चुभ जायें।"

वह फिर बोला — "उँह, तूने मेरे सूँघने के लिये यह बदबूदार भी कुछ बिखेरा है। पर मैं तुझे आज खा जाने वाला हूँ। मैं ज़रा इस हाथ धोने वाले टब में पहले अपने हाथ धो लूँ।"

सो जैसे ही उसने अपने हाथ धोने के लिये उस टब में डुबोये तो वह चिल्लाया — "अरे मुझे तो सॉप ने काट लिया।"

सो वह अपने दर्द भरे हाथों को गर्म पानी के बर्तन में डुबोने के लिये गया तो वहॉ गर्म पानी में हाथ डुबोते ही वह चिल्लाया — "अरे यहॉ तो मुझे मछली ने काट लिया। ओ औरत तू बड़ी नीच है पर फिर भी मैं तुझे खाऊँगा। मैं ज़रा अपने इन हाथों को गर्म राख में थोड़ा सा आराम दे दूँ।"

लेकिन ऐसा करते ही उस राख में रखे अंडे फूट कर उसके चेहरे पर जा पड़े सो वह फिर चिल्लाया — "उफ़ इस सबके लिये मैं तेरी हड्डियॉ तक कुचल कर खा जाऊँगा। तू है कहॉ। मेरे सारे चेहरे पर अंडा पड़ा हुआ है मुझे तो तू दिखायी नहीं दे रही।"

स्त्री बोली — "मैं यहाँ हूँ तू आ कर मुझे ज़रा खा कर तो देख।"

फ्लिप फ्लौप फ्लिप फ्लौप। स्त्री ने फिर उसके पैरों की आवाज सुनी और अब तो नुंग ग्वामा बिल्कुल उसके सोने वाले कमरे में था।

कुछ न दिखायी देने की वजह से वह उसके पलंग से टकरा गया और उसके बिस्तर पर गिर पड़ा बस उसी समय उसने उस पत्थर की रस्सी काट दी और वह राक्षस मर गया।

उसके बालों और हड्डियों के उसको बहुत अच्छे पैसे मिले। उतने पैसे में वह और उसके माता पिता बहुत अच्छी तरह से बहुत दिनों तक रहे।

4 एक ऑख[10]

मैं तो तुझे खाऊँगा की लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप की इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार दो फ़ायर[11] भीख मॉगने निकले। पहाड़ों पर अँधेरा हो गया था पर एक गुफा में रोशनी हो रही थी सो वे वहॉ पहुँच गये और वहॉ जा कर आवाज लगायी — "ओ घर के मालिक, क्या आप हमको रात को सोने के लिये जगह देंगे?"

एक बिजली की कड़क जैसी आवाज जो सारे पहाड़ को कॅपकॅपा गयी बोली — "अन्दर आ जाओ।"

दोनों फ़ायर अन्दर चले गये। वहॉ आग के पास एक बड़े साइज़ का आदमी[12] बैठा हुआ था। उसके एक ऑख थी जो उसके माथे पर थी। वह बोला — "आओ तुम लोग यहॉ बैठो। तुम लोग यहॉ आराम से रहोगे।"

दोनों फ़ायर तो उसको देख कर पत्ते की तरह से कॉपने लगे। वह दोनों फ़ायर के पीछे गया और एक बड़ा सा पत्थर गुफा के दरवाजे पर लगा कर उसने गुफा में घुसने का दरवाजा बन्द कर

[10] One Eye – a folktale from Abruzzo area, Italy, Europe. Adapted from the Book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Its most of the stories are available in Hindi from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[11] Friar is a religious order in Roman Catholic Church especially in mendicant orders

[12] Translated for the word "Giant"

दिया। वह पत्थर इतना बड़ा था कि सौ आदमी भी मिल कर उसे नहीं हटा सकते थे।

उस एक ऑख वाले ने कहा — "हालॉकि खाने के लिये मेरे पास सौ भेड़ें हैं पर अभी तो पूरा साल पड़ा है और मुझे उनको पूरे साल के लिये बचाना है इसलिये अब तुम मुझे यह बताओ कि मैं तुममें से पहले किसको खाऊँ? छोटे फ़ायर को या बड़े फ़ायर को? तुम आपस में तय कर लो, चाहे लौटरी निकाल लो और मुझे बता दो।"

सो लौटरी निकाली गयी और उसमें बड़े फ़ायर का नाम निकला। बड़े फ़ायर का नाम देखते ही वह एक ऑख वाला बड़े फ़ायर की तरफ दौड़ा, उसको एक लोहे की सलाख के चारों तरफ लपेटा और आग पर भूनने के लिये रख दिया।

वह उस लोहे की सलाख को अलटता पलटता रहा और गाता रहा — "मोटा आज छोटा कल, मोटा आज छोटा कल।"

छोटा फ़ायर तो अपने साथी के इस तरह मरने पर बहुत दुखी था और सोच रहा था कि वह अपनी इस तरह की किस्मत को किस तरह से बदल सकता था।

जब बड़े फ़ायर का भुनना खत्म हो गया तो उस एक ऑख वाले ने उसे खाना शुरू किया। उसने बड़े फ़ायर की एक टॉग छोटे फ़ायर को भी स्वाद के लिये खाने के लिये दी। छोटे फ़ायर ने

उसको खाने का केवल बहाना किया पर असल में उसने उसको अपने पीछे फेंक दिया।

जब उस एक ऑख वाले ने बड़े फ़ायर को खा लिया तो उसने उसकी हड्डियॉ उठा कर फेंक दीं और वहीं पास पड़े भूसे पर सो गया। छोटा फ़ायर आग के पास ही गुड़मुड़ी बना बैठ गया पर बहाना करता रहा कि वह भी सोने ही वाला था।

जब उसने एक ऑख वाले की खर्राटे की आवाज सुनी तो उसने वह लोहे की सलाख उठायी जिस पर उसने बड़े फ़ायर को भूना था और उसको लाल हो जाने तक गर्म किया।

इस बीच वह गाता रहा — "इसको भौंक दो इस बड़े साइज़ के आदमी की अकेली ऑख में।" यह कह कर उसने वह लोहे की सलाख उस बड़े साइज़ के आदमी की अकेली ऑख में भौंक दी।

सलाख के ऑख के अन्दर जाते ही वह बड़े साइज़ का आदमी चिल्लाता हुआ कूद कर उठ बैठा और छोटे फ़ायर को पकड़ने के लिये अपने हाथ इधर उधर फेंकने लगा।

अब क्योंकि उसकी ऑख फूट गयी थी तो वह देख तो सकता नहीं था इसलिये छोटा फ़ायर जल्दी ही भेड़ों के झुंड में भाग गया।

एक ऑख वाला उसका पीछा करता रहा और भागते भागते वह भी भेड़ों के झुंड तक आ पहुँचा और अपने हाथों से उनको एक एक कर के महसूस किया पर वह छोटा फ़ायर हर बार उसके हाथों से बच गया।

जब वह एक ऑख वाला उस छोटे फ़ायर को काफी कोशिशों के बाद भी नहीं पकड़ सका तो चिल्ला कर बोला — "तुम ज़रा दिन निकलने तक रुको फिर मैं तुम्हें देखता हूँ।"

यह सुन कर छोटे फ़ायर ने एक भेड़ ली उसकी खाल निकाली और उसमें छिप गया। जब दिन निकल आया तो एक ऑख वाले ने गुफा के दरवाजे से पत्थर हटाया और खुद वहॉ जा कर खड़ा हो गया।

उसकी एक टॉग दरवाजे के एक तरफ थी और दूसरी टॉग दरवाजे के दूसरी तरफ। ऐसा उसने इसलिये किया था ताकि वह हर बाहर जाने वाले को महसूस कर सके।

इस तरीके से वह भेड़ को तो वहॉ से गुजर जाने देगा पर अगर कोई आदमी गुजरेगा तो वह उसको पहचान लेगा। फ़ायर ने एक छोटी भेड़ को अपने ऊपर रखा और उस बड़े साइज़ के आदमी की टॉगों के बीच में से निकल गया।

उस बड़े साइज़ के आदमी को पता ही नहीं चला कि छोटा फ़यर कब उन भेड़ों के झुंड में से निकल कर बाहर भाग गया। उसने सोचा कि उसके नीचे से तो सारी भेड़ें ही निकल कर जा रही है तो लगता है कि वह उसके बिना महसूस किये ही बाहर निकल गया होगा।

इस तरह से उस छोटे फ़ायर ने उस बड़े साइज़ के आदमी से अपनी जान बचायी।

5 तीन बिल्ली बकरे ग्रफ़[13]

मैं तो तुझे खाऊँगा की यह लोक कथा यूरोप के पॉच नौर्स देशों में से नौर्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह कहानी एक पहाड़ी के ऊपर से शुरू होती है। वहॉ हवा बहुत तीखी और ठंडी थी। आसमान बिल्कुल साफ और नीला था। हरे हरे घास के मैदानों में हवा के चलने से घास इधर उधर हिल रही थी।

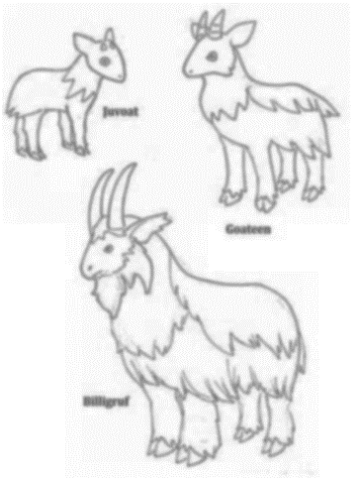

उस पहाड़ी के ऊपर तीन बिल्ली बकरे रहते थे – एक सबसे बड़ा, एक बीच का और एक सबसे छोटा।

उस दिन बड़े वाले बिल्ली बकरे का मन नहीं लग रहा था तो वह अपने दोनों छोटे भाइयों से बोला — "मैं रोज रोज उसी मैदान में से खाना खाते खाते थक गया हूँ। अब मैं उस नदी के उस पार वाले मैदान में से खाना खाना चाहता हूँ।"

छोटा भाई बोला — "नहीं बड़े बिल्ली भाई, हम लोग उस नदी को पार नहीं कर सकते। वह नदी तो बहुत गहरी है और उसका बहाव भी बहुत ज़्यादा है। हम लोग तो उसमें बह जायेंगे।"

---

[13] Three Billy Goats Gruff – a folktale from Norway, Europe. Adapted from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2010/10/three_billy_goats_gruff.html
retold by SE Schlosser.

बीच वाला भाई बोला — "इसके अलावा हम लोग पुल पर से भी नहीं जा सकते बड़े भाई। क्योंकि उस पुल के नीचे एक बहुत बड़ा ट्रौल[14] रहता है। अगर हम लोग उस पुल के ऊपर से जायेंगे तो वह हमको खा जायेगा।"

बड़े बिल्ली बकरे ग्रफ़ ने अपने बड़े बड़े गोल सींगों वाला सिर इधर उधर हिलाते हुए कहा — "मैं उस ट्रौल से नहीं डरता।" कह कर उसने जमीन पर अपना बड़े खुर वाला पैर पटका – एक बार, दो बार, तीन बार।

वह फिर बोला — "उसको मुझे खाने के लिये आने तो दो फिर हम देखते हैं कि कौन जीतता है।"

बीच वाला बकरा बोला — "पर जब वह तुमको खाने के लिये वहाँ आयेगा तो हम लोग तो उसको देखने के लिये वहाँ होंगे नहीं क्योंकि वह हम दोनों को तो पहले ही खा चुका होगा।"

बड़ा बकरा घास के मैदान में चारों तरफ नाचता हुआ चिल्लाया — "नहीं, ऐसा नहीं होगा छोटे भाई। तुम देखना ऐसा नहीं होगा।"

उसके बड़े बड़े खुरों ने उस घास के मैदान में नाचने से बड़े बड़े गड्ढे बना दिये थे। वह बोला — "मेरे दिमाग में एक प्लान है।"

---

[14] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. In Old Norse sources, beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings. See its picture above.

सो तीनों बकरों ने अपने सिर एक साथ मिलाये और आपस में एक दूसरे से बहुत देर तक फुसफुसा कर बात करते रहे फिर उठे और उस चौड़े घास के मैदान को पार कर के पुल की तरफ चल दिये।

यह पुल उस तेज़ बहने वाली नदी के ऊपर बना हुआ था जो उस घास के मैदान को दो हिस्सों में बॉटती थी – एक घास का मैदान उस पुल के इस तरफ था और दूसरा घास का मैदान उस पुल के दूसरी तरफ था।

छोटे बकरे ने हिम्मत के साथ एक लम्बी सॉस भरी और लकड़ी के उस ऊबड़ खाबड़ पुल पर अपना पैर रखा। जैसे जैसे वह उस पुल पर आगे की तरफ चलने लगा उसके छोटे छोटे खुर उस पुल को इधर उधर हिलाने लगे।

एक बड़ी गोल ऑखों के जोड़े ने पुल के नीचे से अँधेरे में से झॉका। वे ट्रौल की ऑखें थीं। ट्रौल बोला — "यह कौन है जो मेरे पुल पर से जा रहा है?"

और इसके बाद ही एक बालों वाली बॉह पुल के नीचे अँधेरे में से बाहर निकली और उसने पुल की रेलिंग पकड़ ली जो उस छोटे बकरे के पास ही थी।

वह छोटा बकरा अपनी छोटी सी आवाज में बोला — "यह मैं हूँ ट्रौल दादा, सबसे छोटा बिल्ली बकरा जिसमें केवल हड्डियॉ और

खाल ही है। मैं मोटा होने के लिये उस पार वाले घास के मैदान में घास खाने जा रहा हूँ।"

तभी ट्रौल के दूसरे हाथ ने भी उस रेलिंग को पकड़ा और वह अपनी इतनी गहरी आवाज में बोला कि सारा का सारा पुल हिल गया — "मैं तुमको खाने आ रहा हूँ।"

छोटा बिल्ली बकरा यह सुन कर सिर से पैर तक काँप गया पर फिर भी हिम्मत कर के बोला — "तुम मुझे खाने आ रहे हो? पर मैं तो बहुत छोटा हूँ। मैं तो तुम्हारे जितने बड़े ट्रौल के मुँह के लिये एक कौर के बराबर भी नहीं हूँ।

तुम मेरे बड़े भाई के आने का इन्तजार करो। वह मेरे पीछे ही आ रहा है। वह मुझसे बहुत बड़ा है तुम उसको खा लेना।"

ट्रौल को यह बात कुछ ठीक सी लगी। इस छोटे से बकरे के पीछे क्यों लगना जबकि इससे बड़ा बकरा इसके पीछे आ रहा है।

सो ट्रौल चिल्लाया — "तो मेरे पुल से हट जाओ और यहाँ तब तक नहीं आना जब तक तुम बड़े और मोटे न हो जाओ।" और यह कह कर वह पुल के नीचे अँधेरे में खिसक गया।

छोटा बिल्ली बकरा बोला — "ठीक है जनाब। धन्यवाद।"

और अपनी जीत की खुशी मनाता हुआ पुल के पार दूसरे घास के मैदान में चला गया। वह खुश था कि उनका प्लान काम कर रहा था।

जब छोटा बिल्ली बकरा दूसरी तरफ पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया तब उनके बीच वाले भाई ने उस पुल पर अपना कदम रखा। उसके बीच के साइज़ के खुर उस पुल पर ट्रप ट्रप करके आवाज कर रहे थे और उसके कदमों से वह पुल इधर उधर हिल भी रहा था।

उसके खुरों की आवाज सुन कर एक बार फिर एक बड़ी गोल ऑखों के जोड़े ने पुल के नीचे के अँधेरे में से झाँका। वे ट्रौल की ऑखें थीं। ट्रौल बोला — "यह कौन है जो मेरे पुल पर से जा रहा है?"

और इसके बाद ही एक बालों वाली बाँह पुल के नीचे से अँधेरे में से बाहर निकली और उसने पुल की रेलिंग पकड़ ली जो उस बीच वाले बकरे के पास ही थी।

वह बीच वाला बकरा अपनी छोटी सी आवाज में बोला — "यह मैं हूँ बीच वाला बिल्ली बकरा ट्रौल दादा, जिसकी जाड़े की वजह से केवल हड्डियाँ और खाल ही बची रह गयी हैं। मैं मोटा होने के लिये पुल के उस पार वाले घास के मैदान में घास खाने जा रहा हूँ।"

ट्रौल की टेढ़ी मेढ़ी लम्बी नाक के दोनों तरफ दो जलती हुई अंगारे जैसी ऑखों ने पुल की रेलिंग के बीच से झाँका और वह बोला — "मैं तुमको खाने आ रहा हूँ ओ बिल्ली बकरे।" उसकी आवाज इतनी मोटी और भारी थी कि उससे सारा पुल हिल गया।

बीच वाला बकरा हँसा और बोला — "तुम मुझे खाने आ रहे हो? पर तुम मुझे क्यों खाना चाहते हो? मैं तो जाड़े की वजह से वैसे ही बहुत पतला हो रहा हूँ।

मैं तो तुम जैसे बड़े ट्रौल का केवल एक या दो कौर जितना बड़ा हूँ। तुमको मेरे बड़े भाई का इन्तजार करना चाहिये। वह मुझसे बहुत बहुत बड़ा है। उसको खा कर तुम्हारा पेट भर जायेगा।"

ट्रौल को यह बात कुछ ठीक सी लगी। उसने सोचा इस बीच वाले बकरे के पीछे भी क्यों लगना जबकि इससे बड़ा बकरा इसके पीछे आ रहा है।

सो ट्रौल चिल्लाया — "तो मेरे पुल से हट जाओ और यहाँ तब तक मत आना जब तक तुम बड़े और मोटे न हो जाओ।" और यह कह कर वह पुल से नीचे अँधेरे में खिसक गया।

छोटा बिल्ली बकरा बोला — "ठीक है जनाब मैं जा रहा हूँ।" और अपनी जीत की खुशी मनाता हुआ वह भी पुल के पार दूसरे घास के मैदान में चला गया।

वहाँ जा कर वह अपने छोटे भाई के पास पहुँच गया। वह भी खुश था कि उनका प्लान काम कर रहा था। वहाँ पहुँच कर दोनों पुल की तरफ यह देखने लगे कि देखें अब बड़े वाले बिल्ली बकरे पर क्या बीतती है।

अब बड़े बिल्ली बकरे ने लकड़ी के उस ऊबड़ खाबड़ पुल पर कदम रखा – टौम्प टौम्प। उसके बड़े बड़े खुरों ने उस पुल के तख्तों को झुकाना शुरू कर दिया और जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया उस के बोझ तले वह पुल चरचराने लगा।

एक बड़ी गोल ऑखों के जोड़े ने पुल के नीचे से अँधेरे में से झॉका। वे ट्रौल की ऑखें थीं। ट्रौल गरजा — "यह कौन है जो मेरे पुल पर से टौम्प टौम्प करता जा रहा है?"

यह कह कर वह एक ही कूद में उस पुल के ऊपर आ गया। उस बड़े और बालों वाले ट्रौल को देख कर बड़े बिल्ली बकरे ने अपनी ऑखें सिकोड़ी और बड़े आदर से अपना बड़ा सिर झुका कर बोला — "यह मैं हूँ ट्रौल जी।"

ऐसा करने से उसके दोनों बड़े सींग उस ट्रौल की तरफ हो गये और यह कह कर वह ट्रौल की तरफ दौड़ पड़ा। वह जा कर ट्रौल से टकरा गया। बड़े बकरे ने ट्रौल को अपने सींगों पर उठा लिया था। सीगों पर उठा कर उसने ट्रौल को ज़ोर से ऊपर उछाल दिया।

"आह।" ट्रौल चिल्लाया। उसके पुल पर से पैर उखड़ चुके थे और वह हवा में बहुत दूर ऊपर तक उछल चुका था।

वहॉ से वह सिर के बल पुल के ऊपर गिर पड़ा। इससे वह पुल ऊपर से ले कर नीचे तक ज़ोर की आवाज के साथ ज़ोर से हिल गया।

फिर बड़े बिल्ली बकरे ने ट्रौल के ऊपर अपने बड़े खुर ज़ोर ज़ोर से रखे जिससे ट्रौल पुल के लकड़ी के तख्तों पर कुचल गया। उसके बाद उसने उसको फिर अपने बड़े बड़े सींगों के ऊपर उठाया और अबकी बार उसने उसको उठा कर नीचे नदी में फेंक दिया।

पानी का बहाव तेज़ था। ट्रौल उस पानी में बहता हुआ दूर चला गया और फिर वहाँ कभी नहीं देखा गया। बड़ा बिल्ली बकरा भी पुल के पार उस घास के मैदान में जा कर अपने दोनों भाइयों से मिल गया।

अब वे तीनों भाई उस पुल पर से कभी भी आ जा सकते थे सो सारी गर्मियाँ तीनों भाइयों ने दोनों घास के मैदानों की घास खूब प्रेम से खायी।

इतनी बढ़िया और मुलायम घास खा खा कर तीनों भाई खूब मोटे हो गये और आराम से रहने लगे।

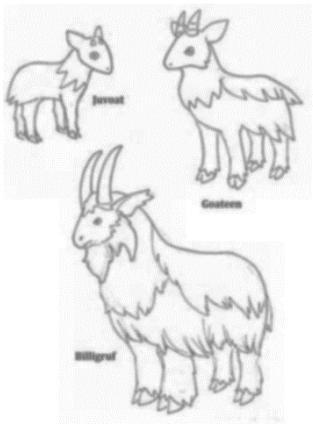

6 घोंघा और चीता[15]

मैं तो तुझे खाऊँगा की लोक कथाओं की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार जानवरों के किसी देश में एक चीता रहता था। उसके पॉच बच्चे थे। इस चीते को कोई भी पसन्द नहीं करता था क्योंकि यह बड़ा चालाक और खतरनाक चीता था।

एक दिन चीते ने कछुए नाई को बुलवाया और कहा — "कछुए भाई, देखो मेरे पॉचों बच्चों के बाल काट दो।" सुन कर कछुआ अन्दर ही अन्दर कसमसाया पर बोल कुछ नहीं सका।

इस पर चीता गरज कर बोला — "ए कछुए, यह मैंने तुम्हें कितनी इज़्ज़त दी है कि तुमको मैंने अपने बच्चों के बाल काटने के लिये बुलाया और तुम्हारे दिमाग ही नहीं मिल रहे हैं।

पर उससे पहले तुम्हें मेरे बाल काटने होंगे। और याद रखना मैं इसके लिये तुम्हें कुछ दूँगा भी नहीं क्योंकि तुम हमारे बाल काट रहे

[15] Snail and Leopard – a folktale of Yoruba people of Nigeria, West Africa

हो यही इज़्ज़त तुम्हारे लिये क्या कम है। और देखो बाल ठीक से काटना वरना तुम्हारी खैर नहीं।"

कछुआ बड़ी नम्रता से बोला — "सरकार, मैं बिना कुछ लिये ही आपके बाल काटने के लिये तैयार हूँ क्योंकि यह तो वाकई मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात है कि मैं आप और आपके परिवार के बाल काट रहा हूँ पर सरकार मेरी एक प्रार्थना है।"

चीते ने पूछा — "वह क्या?"

कछुआ बोला — "मैं आपके बाल आपको उस पेड़ की ऊपर वाली टहनी पर बिठा कर काटना चाहता हूँ। सभी जानवर जब आपको इस तरह उस ऊपर वाली टहनी पर बाल कटाते देखेंगे तो वे आपसे बहुत प्रभावित होंगे।"

चीता बोला — "वाह, यह तो बहुत ही सुन्दर विचार है।" यह कह कर वह पेड़ की ऊपर वाली टहनी पर पॉव फैला कर आराम से लेट गया। पीछे पीछे कछुए ने भी कदम बढ़ाये।

चीते ने एक जॅभाई ली अपनी पूँछ फटकारी और अपनी ऑखें बन्द करते हुए बोला — "कछुए भाई ज़्यादा देर नहीं लगाना।"

कछुआ दिखावे के लिये तो चीते के बाल काटता रहा पर सचमुच में उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया बल्कि उसने धीरे धीरे चीते के काफी बाल उस टहनी से बॉध दिये जिस टहनी पर वह बैठा था ताकि वह उस टहनी से अच्छी तरह बॅध जाये।

फिर उसने अपना चाकू जान बूझ कर नीचे गिरा दिया और उसको उठाने का बहाना बना कर और माफी माँग कर नीचे उतर आया।

उसने चीते के पाँचों बच्चों को उनके पिता के सुन्दर बालों को देखने के लिये बुलाया पर जब वे बच्चे अपनी गुफा से बाहर आये तो उसने उनके पिता के सामने ही उनकी खूब पिटाई की।

अपने बच्चों को पिटता देख कर चीता बड़ी ज़ोर से गरजा और उठ कर कछुए को खाने की सोची, परन्तु तुरन्त ही उसकी यह गरज दर्द भरी चीखों में बदल गयी क्योंकि जैसे ही उसने उठने की कोशिश की तो उसके बाल टहनी से बँधे होने की वजह से वह उठ ही नहीं सका।

उसके बाल खिंच रहे थे और वह नीचे ही नहीं उतर पा रहा था। चीते के बच्चे किसी तरह जान छुड़ा कर जंगल में भाग गये।

उधर चीते की गरज सुन कर जंगल के सारे जानवर चीते पर हँसने लगे। चीते ने उनसे अपने आपको छुड़ाने की बहुत प्रार्थना की परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी और उसकी किसी भी प्रकार की सहायता करने से इनकार कर दिया।

इस हालत में चीता उस टहनी से पूरे दो दिन बँधा रहा और सारे जानवर उसे चिढ़ाते रहे। अब तो उसे भूख भी लग आयी थी।

दूसरे दिन शाम को चीते ने देखा कि एक घोंघा पेड़ की शाखों पर रेंगता हुआ चढ़ा चला आ रहा है। उसने उससे भी सहायता की भीख माँगी और उसकी इस सहायता के बदले में उसकी मनचाही चीज़ देने का वायदा किया।

घोंघा इस शर्त पर चीते को छुड़ाने को राजी हो गया कि छूट जाने के बाद चीता उसे खायेगा नहीं। चीता इस बात पर भी राजी हो गया कि वह आजाद होने के बाद घोंघे को खायेगा नहीं।

घोंघे ने धीरे धीरे चीते के सारे बाल खोल दिये और चीते को पेड़ से आजाद कर दिया।

जब चीता आजाद हो गया तो बहुत ज़ोर से गरजा और पेड़ से नीचे कूद गया और घोंघे से बोला — "दोस्त, अब मैं हर एक को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि वे ज़िन्दगी भर नहीं भूलेंगे। वे फिर कभी भी चीते परिवार का अपमान करने की हिम्मत भी नहीं करेंगे।

मैंने किस तरह इन दो दिनों तक अपने इच्छाओं को कुचला है यह तुम नहीं जानते। अब सबसे पहले तो तुम मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

घोंघा घबरा कर बोला — "पर चीते भाई, तुमने तो मुझे न मारने का वायदा किया था।"

चीता बोला — "चीता कभी सौदेबाजी नहीं करता। तुमने यह सबक देर से सीखा। तब मैं पेड़ के ऊपर बँधा हुआ था पर अब मैं आजाद हूँ और अब सबसे पहले मैं तुम्हें ही मारूँगा।"

अब घोंघे के पास कोई चारा नहीं था। उसने यह सुन कर सूरज देवता को पुकारा — "ओ ओलोजा[16], मुझे बचाओ, मैं मरा।"

ओलोजा ने उसकी पुकार सुन ली। तुरन्त ही ओलोजा ने ग्रहण[17] भेज कर सूरज में ग्रहण लगवा दिया।

इससे सारी धरती पर अँधेरा हो गया। चीते को अँधेरे में घोंघा दिखायी ही नहीं दिया सो अँधेरे में घोंघा चुपचाप खिसक गया।

उस दिन से चीता अपने बाल नहीं कटवाता, किसी से वायदे नहीं करता और हमेशा ही अपने अपमान का बदला लेने के लिये कछुए की खोज में जंगल में घूमता रहता है।

[16] Oloja – the name of Nigerians' Sun god

[17] Translated for the word "Solar Eclipse".

7 चीता और मेंढक[18]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के तिब्बत देश की है। तिब्बत देश भारत के उत्तर में स्थित है और चीन देश में आता है। यह संसार में सबसे ऊँची जगह है[19] – औसतन सोलह हजार फीट। इसलिये इसे संसार की छत भी कहते हैं।

यह तब की बात है जब दुनियाँ बनी ही बनी थी और सारे जानवर एक ही भाषा बोलते थे। एक दिन एक चीता अपना खाना ढूँढने के लिये बाहर निकला कि रास्ते में उसको एक बहुत बड़ा मेंढक दिखायी दे गया।

मेंढक ने भी चीते को देख लिया और वह जान गया कि वह भूखा था। इस समय उसके पास बचने के लिये कोई रास्ता नहीं था सो उसने अपने दिमाग से काम लेने का विचार किया।

जब चीता पास आ गया तो वह बोला — "हलो मिस्टर चीते, तुम कहाँ जा रहे हो?"

---

[18] The Tiger and the Frog – a folktale from Tibet, China, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=227
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[19] Tibet is called "The Roof the World".

चीता बोला — "मैं जंगल जा रहा था अपने लिये कुछ खाना ढूँढने के लिये। मुझे बहुत भूख लगी थी पर क्योंकि अब मुझे तुम मिल गये हो सो अब मैं तुम्हें ही खा लेता हूँ।"

मेंढक ने अपना शरीर फुलाया और बोला — "क्या तुमको मालूम है कि तुम मेरी जमीन पर शिकार कर रहे हो? मैं मेंढकों का राजा हूँ और चारों तरफ की यह सारी जमीन मेरी है। मैं बहुतों से बहुत दूर कूद सकता हूँ और मैं बड़े बड़े जानवर खाता हूँ।"

यह सुन कर चीता मेंढक पर हँस पड़ा।

हँसते हँसते जब वह रुका तो बोला — "तुम तो बहुत ही छोटे हो मेंढक राजा। तुम तो निश्चित रूप से मुझसे ज़्यादा दूर तक नहीं कूद सकते। इससे पहले कि मैं तुम्हें खाऊँ मेरा और तुम्हारी कूद का मुकाबला हो जाये।"

वहीं पास में एक नदी बह रही थी। चीता उस नदी की तरफ देखते हुए बोला — "ठीक है तो इस नदी के उस पार से भी ज़्यादा दूर तक कूदने की कोशिश करो।" कह कर वह नदी के उस पार कूद गया।

पर चीते के कूदने से पहले ही मेंढक ने अपनी लम्बी जीभ से उसकी पूँछ पकड़ ली। जब चीता नदी के उस पार पहुँच गया तो पलट कर उसने नदी के पानी की तरफ देखा।

जैसे ही चीता पलटा तो मेंढक ने उसकी पूँछ छोड़ दी और वह चीता जहाँ उसको देखना चाह रहा था उस जगह से भी कहीं दूर कूद कर जा कर पड़ा।

वह वहीं से चिल्लाया — "मिस्टर चीते, तुम मुझे नदी में क्यों ढूँढ रहे हो? मैं तो यहाँ बैठा हूँ। मैं तुमसे कूद में आगे निकल गया। अब मुझे भूख लग आयी है अब मैं तुमको खाऊँगा।

पर इससे पहले कि मैं तुमको खाऊँ मैं अपने मुँह में से ज़रा चीते के बाल तो निकाल लूँ।" सो उसने अपने मुँह में से चीते की पूँछ के बाल थूकने शुरू कर दिये।

चीते को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेंढक के मुँह में चीते के बाल कहाँ से आये सो उसने मेंढक से पूछा — "पर तुम्हारे मुँह में ये चीते के बाल आये कहाँ से?"

मेंढक बोला — "ओह कल यहाँ एक चीता शिकार करने के लिये आया था। मैं उसके ऊपर कूदा और उसको खा लिया। वह था तो बहुत ही स्वादिष्ट पर उसके शरीर पर बाल बहुत थे। वे अभी तक मेरे मुँह में चिपके हुए हैं।"

अब चीते ने सोचना शुरू किया कि यह मेंढक देखने में तो कितना छोटा है पर लगता है कि बहुत ताकतवर है। यह तो मुझसे भी ज़्यादा दूर तक कूद गया और कल इसने एक चीता खा लिया। इससे पहले कि यह मुझे खा जाये मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिये।

यह सोचते हुए चीता धीरे धीरे पीछे खिसकने लगा और फिर मौका देखते ही जंगल में दूर भाग गया।

जब वह भाग रहा था तो उसको एक लोमड़ा मिला। लोमड़े ने उससे पूछा — "क्या हुआ चीते भाई, तुम इतनी तेज़ तेज़ क्यों भागे जा रहे हो?"

चीता हॉफता सा बोला — "मैं अभी मेंढकों के राजा से मिला था। वह देखने में तो बहुत छोटा सा है पर है बहुत ही ताकतवर। वह मुझसे ज़्यादा दूर तक कूद सकता है और कल तो उसने एक चीता ही खा लिया था।"

यह सुन कर लोमड़ा बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुम जैसा बड़ा चीता उस छोटे से मेंढक से डर कर भाग सकता है। मैं तो तुमसे भी छोटा हूॅ पर मैं उस मेंढक से ज़्यादा ताकतवर हूॅ। आओ मेरे साथ और मुझे उसको खाते हुए देखो।"

चीता बोला — "मुझे मालूम है कि मेंढक क्या कर सकता है पर फिर भी अगर तुम यह सोचते हो कि तुम उससे ज़्यादा ताकतवर हो तो चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूॅ।

पर मुझे डर है कि तुम भी उससे डर जाओगे और वहॉ से भाग जाओगे इसलिये हमको अपनी पूछें आपस में बॉध लेनी चाहिये।" सो दोनों ने अपनी अपनी पूॅछें आपस में गॉठ लगा कर बॉध लीं।

जब मेंढक ने दोनों को एक साथ आते हुए देखा तो बोला — "ओह मिस्टर लोमड़े, अच्छा हुआ तुम समय से मेरा खाना ले कर आ गये। मुझे तो डर था कि कहीं मुझे बजाय चीते जैसे बड़े जानवर के तुम जैसे छोटे जानवर को ही न खाना पड़ जाये।"

चीता यह सुन कर फिर डर गया। उसको लगा कि यह लोमड़ा चालाकी से उसको मेंढक के पास उसको खिलाने के लिये ले जा रहा है सो वह तुरन्त पलटा और लोमड़े को अपने पीछे घसीटता हुआ वहाँ से भाग लिया।

अगर वे दोनों मरे नहीं हैं तो वे अभी भी मेंढक से डर कर भाग रहे होंगे।

8 गिरगिट और चीते की लड़ाई[20]

मैं तो तुझे खाऊँगा की यह लोक कथा हमने एशिया महाद्वीप के श्रीलंका देश की लोक कथाओं से ली है। इस लड़ाई में एक छोटा सा गिरगिट एक खूँख्वार चीते को लड़ाई में हरा देता है। देखते हैं कैसे।

एक बार की बात है कि एक चीता[21] अपना खाना ढूँढने निकला कि उसको केवल एक छोटा सा गिरगिट एक पेड़ की शाख पर बैठा दिखायी दे गया।

चीता गिरगिट से बोला — "बहुत अच्छे, आज तुम ही मेरा खाना हो।"

गिरगिट बोला — "पर मैं तो बहुत छोटा हूँ। मैं तुम्हारे खाने के लिये ठीक नहीं हूँ।"

चीता चिल्लाया — "पर मैं बहुत भूखा हूँ। चाहे तुम मेरा एक छोटा सा कौर ही सही पर फिर भी मैं तुमको खाऊँगा।"

गिरगिट ने अपने को बड़ा दिखाने के लिये अपने गाल फुलाये और बोला — "तुम मुझे खाने की कोशिश कर सकते हो पर मैं

[20] Lizard's Duel With Leopard – a folktale from Sri Lanka (Ceylon), Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=56 Retold and written by Mike Lockett.
[21] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

तुमसे लड़ूँगा। तुम्हारे दाँत बहुत बड़े और तेज़ हैं जबकि मेरे दाँत बहुत छोटे हैं पर फिर भी तुमको काटूँगा।

तुम्हारे पंजे भी बड़े और तेज़ हैं और मेरे पंजे छोटे हैं फिर भी मैं उनसे तुमको खरोंचूँगा। तुम बहुत ताकतवर हो जबकि मैं कमजोर हूँ फिर भी मैं तुमसे लड़ूँगा।"

गिरगिट फिर चिल्लाया — "तुम बहादुर हो और मैं डरा हुआ हूँ पर फिर भी मैं अपने आपको बचाऊँगा। तुम मुझे काटने की कोशिश तो करो अगर तुम कर सकते हो तो ...।

गिरगिट के इस चिल्लाने को पेड़ों पर रहते बन्दरों ने सुना तो वे चिल्लाये — "चीता तो हमेशा से ही लड़ने वाला जानवर है वह उन सब जानवरों को लड़ने के लिये पकड़ लेता है जो उससे छोटे और कमजोर हैं।"

यह सुन कर चीता कुछ हिचक गया और बोला — "मैं केवल बराबर वालों से लड़ता हूँ।"

गिरगिट बोला — "बहुत अच्छे। तो मुझे अपने से लड़ने के लिये एक महीने का समय दो। तब मैं तुम्हारे बराबर हो जाऊँगा और तब हम लड़ सकते हैं।"

चीता भूखा था पर फिर भी वह गिरगिट को लड़ाई के लिये तैयार होने के लिये एक महीने का समय देने के लिये राजी हो गया और वहाँ से चला गया।

गिरगिट जानता था कि वह कभी भी चीते के बराबर या उससे ज़्यादा ताकतवर नहीं हो सकता पर उसका दिमाग चीते से ज़्यादा तेज़ी से काम कर रहा था।

वहॉ से गिरगिट एक नदी के किनारे पर गया जहॉ बहुत सारी गीली कीचड़ और मिट्टी थी। उसने वह कीचड़ और मिट्टी अपने शरीर पर लपेट ली। फिर वह धूप में लेट गया जिससे वह मिट्टी उसके शरीर पर चिपक कर जम गयी।

अगले दिन वह एक चावल के खेत में गया वहॉ भी वह वहॉ की मिट्टी और भूसे में इधर उधर लेटा जिसे खेत वाले चावल काटने के बाद वहॉ छोड़ गये थे। इसके बाद वह फिर उस सबको सुखाने के लिये धूप में लेट गया।

इस तरह हर दिन वह गिरगिट पहले कीचड़ मिट्टी भूसे तिनके आदि में लेटता और फिर उनको धूप में सुखाता। इस तरह वह दिन ब दिन बड़ा होता जा रहा था।

महीने के आखीर में गिरगिट ने अपने चेहरे और पंजों के ऊपर से कीचड़ धोयी ताकि चीता उसको पहचान सके। बाकी की कीचड़ और मिट्टी उसने अपने शरीर पर ऐसे ही लगी छोड़ दी जो उसके लिये चीते से लड़ाई के समय कवच का काम करती।

महीने के खत्म होने पर गिरगिट चीते से वहीं मिला जहॉ उसने उससे मिलने का वायदा किया था। चीते ने उस जगह जा कर यह पहले ही देख लिया था कि वहॉ कोई बन्दर या कोई और दूसरा

जानवर तो नहीं था जो उसको इतने छोटे से जानवर से लड़ता देखता।

चीते ने पहले हमला किया। उसने गिरगिट को अपने बड़े वाले पंजे से मारा। उस पंजे की मार से गिरगिट के शरीर की कुछ कीचड़ उखड़ गयी पर गिरगिट को कोई चोट नहीं आयी।

गिरगिट ने चीते की टॉग पर वार किया तो उसकी टॉग पर थोड़ी सी खरोंच आ गयी और उसमें से खून निकलने लगा।

चीते ने गिरगिट की गर्दन पर काटने की कोशिश की पर इससे उसके मुँह में केवल थोड़ी सी मिट्टी और सड़ी हुई घास ही आयी।

फिर गिरगिट कूद कर चीते की पीठ पर बैठ गया। उसने चीते के कानों में काटा और उसकी नाक में खरोंच मारी। इससे चीता दर्द के मारे लोटने लगा और उसने गिरगिट को झटक कर दूर फेंक दिया।

उसने फिर गिरगिट को बार बार मारा और काटा पर हर बार मारने पर वह उसके शरीर पर से केवल थोड़ी सी मिट्टी ही खुरच सका और हर बार काटने पर थोड़ी सी कीचड़ और भूसा ही चख सका जो कोई भी खाना नहीं चाहता था।

गिरगिट का चीते को काटना बहुत छोटा सा था पर क्योंकि वह चीते के नंगे शरीर पर था इसलिये वह उसको बहुत महसूस हो रहा था। गिरगिट की खरोंचें छोटी छोटी थीं पर वे चीते को लहू लुहान कर रहीं थीं।

चीते का सारा शरीर घायल हो चुका था। उसका दर्द इतना बढ़ गया था कि वह उसको और नहीं सह सका और लड़ाई के मैदान से भाग खड़ा हुआ।

वह एक जगह बैठ कर अपने घावों को चाटने लगा। वह दुखी हो कर बार बार यही कह रहा था गिरगिट ने मुझे यहाँ काटा है। गिरगिट ने मुझे यहाँ काटा है।

चीते को यह पता ही नहीं था कि एक लकड़ी काटने वाला यह सारी लड़ाई देख रहा था। वह देख रहा था कि एक इतना बड़ा चीता एक छोटे से गिरगिट से लड़ रहा था।

उसने यह भी देखा कि चीते के मुँह में बार बार कीचड़ आ रही थी और वह उसको थूक रहा था। यह सब देख कर उसको हँसी आ रही थी।

फिर उसने देखा कि चीता गिरगिट के दिये घाव चाट रहा था और दर्द के मारे रो रहा था। अब उससे अपनी हँसी न रुक सकी और वह ज़ोर से हँस दिया।

चीते को पता नहीं था कि कौन हँस रहा था सो वह यह देखने के लिये कि कौन हँस रहा था एक पेड़ पर चढ़ गया ताकि वहाँ से उस हँसने वाले को ठीक से देख सके।

उसको वह आदमी दिखायी दे गया तो वह उससे बोला — "तुम हँसना बन्द करो वरना मैं तुमको खा जाऊँगा।" और चीता

उसको खा भी जाता पर उसको डर था कि गिरगिट कहीं पास में ही न हो और वह उसको देख न रहा हो।

लकड़ी काटने वाला बोला — "मेहरबानी कर के मुझे मत खाओ।" फिर उसने अपना हँसना बन्द कर के कहा — "ठीक है ठीक है मैं अब मैं हँसूँगा भी नहीं और किसी को बताऊँगा भी नहीं।"

चीते ने पूछा — "तुम अपनी पत्नी को तो नहीं बताओगे?"

आदमी बोला — "नहीं नहीं, मैं अपनी पत्नी को भी नहीं बताऊँगा।"

चीते ने पूछा — "तुम अपने बच्चों और गाँव के दूसरे लोगों को तो नहीं बताओगे?"

आदमी बोला — "नहीं, मैं अपने बच्चों और दूसरे गाँव वालों को भी नहीं बताऊँगा।"

सो चीते ने उसको जाने दिया। पर बाद में चीते को चिन्ता होने लगी क्योंकि आदमी और औरतें भेद छिपाने में बहुत अच्छे नहीं होते। अगर उस आदमी ने यह बात किसी दूसरे को बता दी और दूसरे जानवरों ने यह सुन लिया तो वे सभी मेरे ऊपर हँसेंगे।

सो चीता जंगल से चल कर उस लकड़ी काटने वाले के घर आया और उसके घर के सामने आ कर बैठ गया। वह यह सुनने की कोशिश करने लगा कि वह वहाँ क्या बात करता है।

तभी चीते ने आदमी की हँसी की आवाज सुनी। आदमी की पत्नी और बच्चों ने पूछा — "आप क्यों हँस रहे हैं?"

पर आदमी ने उनको कुछ बताया नहीं। वह बोला — "मैंने वायदा किया है कि मैं किसी को नहीं बताऊँगा और मैं अपने वायदे का पक्का हूँ।"

चीता खिड़की से झाँक रहा था। उसने देखा कि वह आदमी और उसकी पत्नी बच्चों को सुला रहे थे। फिर बाद में पत्नी भी सोने चली गयी। आदमी ने रोशनी बुझा दी।

अब चीता वहाँ से चलने को ही था कि उसने आदमी की हँसी फिर से ज़ोर से सुनी। चीते ने सुना कि वह अपनी पत्नी से कह रहा था — "अब मैं चुप नहीं रह सकता। मैं बच्चों को तो नहीं बताऊँगा पर मैं तुमको जरूर बताऊँगा।"

फिर उसने अपनी पत्नी को सब बता दिया कि कैसे एक छोटे से गिरगिट ने एक बड़े से चीते को हरा दिया। वह आगे बोला — "यह सब बहुत ही मजेदार था। चीता कहता ही रहा "उसने मुझे यहाँ काटा, उसने मुझे यहाँ काटा।" वह सब कुछ कितना हँसाने वाला था।"

यह सुन कर चीता बहुत गुस्सा हुआ और वह उस आदमी के घर पर चढ़ गया। वहाँ पहुँच कर उसने छत में एक बड़ा सा छेद किया और उसके घर में कूद गया।

वहाँ जा कर वह उस आदमी के सो जाने का इन्तजार करने लगा। आदमी के सो जाने के बाद वह उसके पलंग के नीचे घुसा और उस पलंग को उठा कर घर के बाहर ले गया। वह उस आदमी को जंगल ले जा कर खाना चाहता था।

उधर आदमी ने सपने में देखा कि वह किसी जंगल में चल रहा है और जंगल के पेड़ों की शाखाएँ उसके सिर पर हिल रही हैं। वह सब उसको बहुत ही सच्चा लग रहा था।

कि तभी उसकी आँखों पर चाँद चमका तो उसकी आँख खुल गयी। पर यह तो सपना नहीं था सच ही था क्योंकि वह तो अपने घर में नहीं था, वाकई जंगल में था।

उसने अपने पलंग के नीचे झाँक कर देखा तो उसके पलंग के नीचे तो चीता था।

लकड़ी काटने वाला जानता था कि यह चीता अब उसे खा जायेगा सो वह अपने पलंग पर उठ कर बैठ गया। उसने एक पेड़ की शाख पकड़ ली और उस पेड़ पर चढ़ गया।

चीते ने महसूस किया कि उसका बोझ तो काफी हलका हो गया है सो उसने भी तुरन्त ही ऊपर देखा तो देखा कि आदमी तो पेड़ पर चढ़ रहा था।

बस चीते ने वह पलंग फेंक दिया और चिंघाड़ कर वह भी उस पेड़ पर चढ़ने लगा। आज उसको उस आदमी को खाने से कोई नहीं रोक सकता था।

उसी समय वह आदमी ऊपर से बोला — "तुम्हारे ऊपर हँसने का मुझे बहुत अफसोस है मिस्टर चीते, मगर अब तुमको इससे ज़्यादा ऊँचा नहीं चढ़ना चाहिये क्योंकि मेरे पास वह गिरगिट बैठा हुआ है और अगर तुम और ऊपर चढ़े तो वह तुमको फिर से काट लेगा।"

बस यह सुनना था कि चीता डर गया और वहाँ से जल्दी से भाग गया। भाग कर वह बहुत दूर चला गया क्योंकि वह गिरगिट से दोबारा से नहीं लड़ना चाहता था।

अब वह आदमी चीते और गिरगिट की लड़ाई की कहानी बिना किसी डर के सबको सुना सकता था कि किस तरह एक छोटे से गिरगिट ने इतने बड़े चीते को हराया।

9 चाचा भेड़िया[22]

मैं तो तुझे खाऊँगा की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली के बोलोग्ना क्षेत्र में कही सुनी जाती है।

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बहुत ही लालची लड़की थी। एक बार ऐसा हुआ कि मेले[23] के समय उसके स्कूल की मास्टरनी जी ने बच्चों से कहा — "अगर तुम लोग ठीक से रहोगे और अपनी बुनाई समय से खत्म कर लोगे तो मैं तुमको खाने के लिये पैनकेक[24] दूँगी।"

पर यह छोटी लड़की तो बुनना जानती नहीं थी सो उसने उस मास्टरनी से टौयलेट जाने की इजाज़त माँगी और वहाँ जा कर वह बैठ गयी और सो गयी।

जब वह अपनी कक्षा में वापस आयी तो दूसरी लड़कियों ने अपने अपने पैनकेक खा कर खत्म भी कर दिये थे। वह रोती रोती घर चली गयी और जा कर माँ को सब कुछ बताया कि उस दिन स्कूल में क्या हुआ था।

---

[22] Uncle Wolf – a folktale from Italy from its Bologna area. Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[23] Carnival time

[24] Pancakes are typically made of white flour solution like very thick, 1/2" thick South Indian Dosa, but in very small size – in about 6" diameter and is normally eaten in breakfast with syrup or butter etc. See their picture above.

मॉ बोली — "बेटी अच्छी बच्ची बन। मैं तेरे लिये बहुत सारे पैनकेक बना दूँगी।"

पर उसकी मॉ इतनी गरीब थी कि उसके पास तो तवा भी नहीं था जो वह उसके लिये पैनकेक बना सकती। सो एक दिन उसने अपनी बेटी से कहा — "जा चाचा भेड़िया के पास जाना और जा कर ज़रा उनसे तवा उधार मॉग ला तो मैं तेरे लिये पैनकेक बना दूँगी।"

वह छोटी लड़की चाचा भेड़िया के घर चल दी और उसके घर पहुँच कर उसने उसका दरवाजा खटखटाया।

"कौन है?"

"मैं हूँ।"

"कितने साल हो गये हैं इतने दिनों में किसी ने इस घर का दरवाजा नहीं खटखटाया। तुम्हें क्या चाहिये।"

"मॉ ने मुझे यहॉ इसलिये भेजा है कि अगर आप हमें पैनकेक बनाने के लिये अपना तवा उधार दे सकें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

"एक मिनट। ज़रा मैं अपनी कमीज पहन लूँ।"

"खट खट खट।"

"एक मिनट। ज़रा मैं अपना जॉघिया पहन लूँ।"

"खट खट खट।"

"एक मिनट। ज़रा मैं अपनी पैन्ट पहन लूँ।"

"खट खट खट"

"एक मिनट। ज़रा मैं अपना बड़ा वाला कोट पहन लूँ।"

यह सब करने के बाद चाचा भेड़िये ने दरवाजा खोला और उस लड़की को तवा दे कर बोला — "यह तवा मैं तुमको दे तो रहा हूँ पर अपनी माँ को बोलना कि वह यह तवा मुझे पैनकेक से भर कर वापस करेगी। और हाँ इसके साथ में एक गोल डबल रोटी और एक बोतल शराब भी।"

"हाँ, हाँ, मैं आपके लिये सब कुछ ले कर आऊँगी।" कह कर वह लड़की वह तवा ले कर चली गयी।

जब वह घर पहुँची तो उसकी माँ ने उसके लिये बहुत सारे पैनकेक बनाये और उसके चाचा के लिये भी।

रात होने से पहले उसने बच्ची से कहा — "ये पैनकेक, यह गोल डबल रोटी और यह शराब की बोतल तुम अपने चाचा भेड़िये के लिये ले जाओ।"

जब वह रास्ते में जा रही थी तो उसको पैनकेक की बहुत ज़ोर की खुशबू आ रही थी। उसने सोचा "ओह कितनी अच्छी खुशबू है। मैं उनमें से एक खा लूँ।"

सो उसने उनमें से एक पैनकेक खा लिया। पर फिर दूसरा, और फिर तीसरा और फिर चौथा... और बहुत जल्दी ही वह सारे पैनकेक खा गयी और इस तरह वे सब पैनकेक खत्म हो गये।

अब उसके बाद नम्बर आया डबल रोटी का और फिर शराब का। वह भी सब खत्म हो गये। अब उस तवे को भरने के लिये उसने गधे का लीद उठा ली और वह शराब की बोतल गन्दे पानी से भर ली।

डबल रोटी की जगह उसने चूने का एक गोला रख लिया जो उसने वहीं रास्ते में से एक मकान बनाने वाले की जगह से उठा लिया था।

जब वह चाचा भेड़िया के घर पहुँची तो उसने यह सब गन्दी चीज़ें उसको दे दीं।

चाचा भेड़िया ने पैनकेक का एक कौर खाया तो उसको तुरन्त थूक कर बोला — "अरे यह तो गधे की लीद है।"

तुरन्त ही उसने अपना मुँह साफ करने के लिये शराब की बोतल खोली तो उसके स्वाद से भी उसका मुँह खराब हो गया।

फिर उसने डबल रोटी खायी तो चिल्लाया — "अरे यह तो चूना है।"

उसने बच्ची को घूर कर देखा और बोला — "तूने मुझे धोखा दिया? आज की रात मैं तुझे खा जाऊँगा।"

बच्ची दौड़ कर घर गयी और अपनी माँ से बोली — "माँ, आज की रात चाचा भेड़िया मुझे खाने आ रहे हैं।"

उसकी माँ बेचारी घर के सारे दरवाजे खिड़कियाँ बन्द करने लग गयी। फिर उसने घर के सारे छेद बन्द किये ताकि चाचा भेड़िया घर में न घुस सके। पर वह घर की चिमनी बन्द करना भूल गयी।

जब रात हो गयी और बच्ची सोने चली गयी तो घर के बाहर चाचा भेड़िये की आवाज सुनायी पड़ी — "मैं अब तुम्हें खाऊँगा। मैं यहीं बाहर हूँ। मैं आ रहा हूँ।"

और फिर उसके बाद छत पर पाँवों की आवाज सुनायी पड़ी — "मैं अब तुम्हें खाऊँगा। मैं यहाँ छत पर हूँ।"

और फिर चिमनी में से आवाज आयी — "मैं अब तुम्हें खाऊँगा। मैं यहाँ चिमनी के ऊपर हूँ।"

"माँ माँ, भेड़िया आ रहा है।"

माँ बोली — "चादर के अन्दर छिप जा।"

"मैं अब तुम्हें खाऊँगा। मैं अब चिमनी से नीचे आ गया हूँ।"

वह बच्ची तो थर थर काँपने लगी और डर के मारे बहुत छोटी सी सुकड़ कर अपने बिस्तर के एक तरफ को हो गयी।

"मैं अब तुम्हें खाऊँगा। अब मैं यहीं कमरे में हूँ।"

छोटी लड़की ने अपनी साँस रोक ली।

"मैं अब तुम्हें खाऊँगा। मैं अब तुम्हारे बिस्तर के पास हूँ।"

और यह कह कर वह उसको खा गया। और इस तरह चाचा भेड़िया हर लालची लड़की को खा जाता है। लालच करना अच्छी बात नहीं है।

10 भूखा भेड़िया[25]

मैं तो तुझे खाऊँगा की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के लैटविया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक भेड़िया बहुत भूखा था सो वह अपना खाना ढूँढने निकला। जब वह अपना खाना ढूँढता ढूँढता जा रहा था तो उसको एक बड़ा मोटा सा बकरा[26] दिखायी दे गया।

वह बोला — "मिस्टर बकरे, मुझे बहुत भूख लगी है मैं तुमको खाना चाहता हूँ।"

बकरा बोला — "मगर तुम हो कौन? अगर तुम मुझको खाना ही चाहते हो तो पहले मुझे यह तो जानना ही चाहिये न कि तुम हो कौन।"

"मैं भेड़िया हूँ, बहुत भूखा भेड़िया। मैं तुमको खाना चाहता हूँ।"

बकरा बोला — "नहीं, तुम भेड़िये नहीं हो, तुम तो कुत्ते हो।"

भेड़िया बोला — "नहीं, मैं कुत्ता नहीं हूँ, मैं भेड़िया हूँ, और मैं तुमको खाना चाहता हूँ।"

---

[25] The Hungry Wolf – a folktale from Latvia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=228 Retold and written by Mike Lockett.

[26] Translated for the word "Ram"

बकरा बोला — "ठीक, अगर तुम भेड़िये हो तब मैं तुमको अपने आपको खाने दूँगा। तुम उस पहाड़ी के नीचे अपना मुँह बड़ा सा खोल कर खड़े हो जाओ। मैं उस पहाड़ी के नीचे की तरफ भागता हुआ आऊँगा और तुम्हारे मुँह में आ कर कूद जाऊँगा।"

भेड़िया पहाड़ी के नीचे जा कर खड़ा हो गया और अपना मुँह खोल लिया। उधर बकरा पहाड़ी पर चढ़ गया और वहाँ से जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था दौड़ कर नीचे आया।

उसने अपने सींग नीचे कर रखे थे सो उनके भेड़िये से टकराने की वजह से वह भेड़िया तो नीचे गिर पड़ा और वह खुद दूर भागता चला गया।

भेड़िया उठा और सोचने लगा — "मुझे नहीं लगता कि मैं इस बकरे के लिये भूखा हूँ। मुझे अपने शिकार के लिये कहीं और चलना चाहिये।" सो वह कोई और शिकार ढूँढने के लिये चल दिया। तभी उसको एक घोड़ा दिखायी दिया।

वह बोला — "मिस्टर घोड़े, मैं बहुत भूखा हूँ मैं तुमको खाऊँगा।"

घोड़ा बोला — "मगर तुम हो कौन? इससे पहले कि तुम मुझे खाओ मै यह जानना चाहूँगा कि तुम हो कौन?"

भेड़िया बोला — "मैं भेड़िया हूँ।"

घोड़ा बोला — "नहीं, तुम मुझे भेड़िये नहीं लगते, तुम तो मुझे कुत्ता लगते हो।"

"नहीं मैं कुत्ता नहीं हूँ मैं भेड़िया हूँ और मैं तुमको खाने वाला हूँ क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी है।"

घोड़ा बोला — "ठीक है। अगर तुम भेड़िया हो तो मैं तुमको अपने आपको खाने दूँगा। पर मैं बहुत पतला सा हूँ। तुम मुझे मेरी पूँछ से खाना शुरू करो। जब तुम मुझे खा रहे होगे तो मैं अपने आपको मोटा करने के लिये घास खाता रहूँगा।"

सो भेड़िया घोड़े को उसकी पूँछ से खाने के लिये उसके पीछे पहुँच गया। उसने पहला कौर खाने के लिये अपना मुँह खोला ही था कि घोड़े ने अपने पिछले पैरों से उसके मुँह पर मारा।

बेचारा भेड़िया पहाड़ से नीचे की तरफ लुढ़कता ही चला गया। काफी नीचे पहुँचने पर वह उठा और सोचने लगा — "मुझे नहीं लगता कि मैं इस घोड़े के लिये भूखा हूँ। मुझे अपने शिकार के लिये कहीं और जाना चाहिये।"

सो वह फिर से किसी और शिकार को ढूँढने के लिये चल दिया। आगे चलने पर उसको एक सूअर दिखायी दिया। वह बोला — "मिस्टर सूअर, मैं तुमको खाऊँगा क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी है।"

सूअर बोला — "मगर तुम हो कौन? इससे पहले कि तुम मुझे खाओ मैं यह जानना चाहूँगा कि तुम हो कौन?"

भेड़िया बोला — "मैं भेड़िया हूँ।"

सूअर बोला — "नहीं, तुम भेड़िया नहीं हो तुम तो कुत्ता हो।"

भेड़िया बोला — "नहीं मैं कुत्ता नहीं हूँ मैं भूखा भेड़िया हूँ और मैं तुमको खाने वाला हूँ।"

सूअर बोला — "ठीक है। अगर तुम भेड़िया हो तो मैं तुम्हें अपने आपको खाने दूँगा। पर मैं पहले तुमको अपने ऊपर चढ़ा कर घुमाना चाहूँगा तब तुम मुझको खा लेना। आओ मेरे ऊपर बैठ जाओ।"

भेड़िये ने पहले कभी सूअर की सवारी नहीं की थी सो उसको लगा कि इसकी सवारी करने में तो बड़ा मजा आयेगा। भेड़िया तुरन्त ही सूअर की पीठ पर कूद कर चढ़ कर बैठ गया।

भेड़िये को अपनी पीठ पर चढ़ा कर सूअर एक बाड़ के नीचे से भागा। भेड़िया उस बाड़ से ज़ोर से टकरा गया और उसकी पीठ से नीचे गिर गया।

तभी वहाँ शहर के कुत्ते आ गये। भेड़िया बोला — "मुझे नहीं लगता कि मैं इस सूअर के लिये भूखा हूँ। हर कोई देखो, मैं कुत्ता नहीं हूँ, मैं तो भेड़िया हूँ, कुत्ते तो वे रहे।"

यह कह कर भेड़िया वहाँ से भाग गया और कुत्ते उसके पीछे लग गये। बेचारा भूखा भेड़िया।

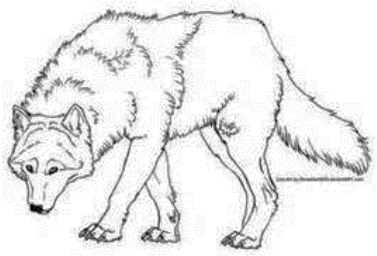

11 क्रिस्टल का मुर्गा[27]

मैं तो तुझे खाऊँगा की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाती है। इस कहानी में एक चिड़ा एक भेड़िये को चकमा दे कर मार डालता है। कैसी अजीब सी बात है, है न? पर क्यों? क्योंकि भेड़िया उसको खाना चाहता है।

एक बार एक मुर्गा था जो दुनियॉ घूमने के लिये निकला। चलते चलते उसको सड़क पर पड़ी हुई एक चिट्ठी मिल गयी। उसने उस चिट्ठी को अपनी चोंच से उठा लिया और उसे पढ़ने लगा। उसमें लिखा था —

"क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख, पीले पंखों वाला चिड़ा – चलो सब टौम थम्ब की शादी में चलो।"[28]

मुर्गा यह पढ़ कर बहुत खुश हुआ सो वह उसी दिशा में चल दिया जिस तरफ टौम थम्ब का घर था। चलते चलते उसको क्रिस्टल की मुर्गी मिल गयी।

मुर्गी ने उससे पूछा — "मुर्गे भाई, कहॉ चले?"

"मैं तो टौम थम्ब की शादी में जा रहा हूँ।"

---

[27] Crystal Rooster – a folktale from Italy from its Marche area.
Aadapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.

[28] Crystal Rooster, Crystal Hen, Countess Goose, Abbess Duck, Gold Finch Birdie. Let's be off to Tom Thumb's Wedding.

"क्या मैं भी उसकी शादी में चल सकती हूँ?"

"अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो उसने बुलावे की वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़ी — "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी..."

"हॉ हॉ तुम्हारा नाम तो यहॉ लिखा है तुम भी चल सकती हो। चलो चलें।"

सो वह मुर्गा और मुर्गी दोनों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। कुछ दूर जाने पर उनको काउन्टैस हंसिनी मिली।

हंसिनी ने पूछा — "मुर्गी बहिन और मुर्गे भाई, कहॉ चले?"

मुर्गा बोला — "हम लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप दोनों के साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकती हूँ?"

"अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और फिर से पढ़ी – "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी..."

"ओह यहॉ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है हंसिनी बहिन इसलिये तुम भी हमारे साथ चल सकती हो। चलो तुम भी चलो।"

अब वे तीनों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। चलते चलते उनको काउन्टैस बतख मिल गयी।

बतख ने पूछा — "बहिन हंसिनी, बहिन मुर्गी, और भाई मुर्गे, आप सब लोग कहाँ जा रहे हैं?"

"हम सब लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप सबके साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकती हूँ?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे की इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़ी – "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख..."

"ओह यहाँ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है बतख बहिन सो तुम भी हमारे साथ चल सकती हो। चलो तुम भी हमारे साथ चलो।"

अब वे चारों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। चलते चलते उनको पीले पंखों वाला चिड़ा मिल गया। उसने पूछा — "बहिन बतख, बहिन हंसिनी, बहिन मुर्गी, और भाई मुर्गे, आप सब लोग कहाँ जा रहे हैं?"

मुर्गा बोला — "हम लोग टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप सबके साथ टौम थम्ब की शादी में चल सकता हूँ?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे वाली इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने वह चिट्ठी फिर से खोली और पढ़नी शुरू की – "क्रिस्टल के मुर्गे, क्रिस्टल की मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी, ऐबैस बतख, पीले पंखों वाला चिड़ा..."

"ओह यहॉ तो तुम्हारा नाम भी लिखा है चिड़े भाई सो चलो तुम भी हमारे साथ चलो।"

अब वे पॉचों टौम थम्ब की शादी में चल दिये। अब क्या था वे सब आनन्द में बातें करते चले जा रहे थे कि चलते चलते उनको एक भेड़िया मिल गया।

उसने भी उनसे पूछा — "आप सब कहॉ जा रहे हैं?"

मुर्गे ने जवाब दिया — "हम सब टौम थम्ब की शादी में जा रहे हैं।"

"क्या मैं भी आप सबके साथ वहॉ चल सकता हूँ?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर अगर तुम्हारा नाम बुलावे वाली इस चिट्ठी में लिखा हो तो।"

सो मुर्गे ने एक बार फिर वह चिट्ठी निकाली और उसको पढ़नी शुरू की। पर उसमें भेड़िये का नाम तो कहीं भी नहीं था।

मुर्गा बोला "पर बुलावे की इस चिट्ठी में तुम्हारा नाम तो कहीं है नहीं भेड़िये भाई।"

भेड़िया बोला — "पर मैं तो जाना चाहता हूँ।"

यह सुन कर सारे जानवर डर गये। वे तो उसको न हाँ कर सके और न उसको ना कर सके। वे डर के मारे बोले — "ठीक है। चलो तो फिर तुम भी हमारे साथ चलो हम सब चलते हैं।"

वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि भेड़िया बोला — "मुझे तो भूख लगी है।"

मुर्गा बोला — "अफसोस मेरे पास तो तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"तो मैं तुमको ही खा जाऊँगा।" कह कर उसने अपना बड़ा सा मुँह खोला और मुर्गे को साबुत ही निगल गया।

कुछ दूर आगे जाने के बाद भेड़िया फिर बोला — "मुझे तो अभी और भूख लगी है।"

इस बार मुर्गी बोली — "अफसोस हमारे पास तो तुमको देने के लिये कुछ भी नहीं है।"

"तो मैं तुमको ही खा जाऊँगा।" कह कर उसने अपना बड़ा सा मुँह खोला और मुर्गी को भी साबुत ही निगल गया। यही हाल हंसिनी और बतख का भी हुआ।

अब केवल भेड़िया और पीला चिड़ा ही रह गये। कुछ दूर आगे चलने के बाद भेड़िया फिर बोला — "ओ पीले चिड़े, मुझे तो अभी भी भूख लगी है।"

पीला चिड़ा बोला — "तुम क्या सोचते हो कि मैं तुमको क्या दे सकता हूँ?"

"अगर तुम मुझे कुछ नहीं दे सकते तो फिर मैं तुम्हें ही खा जाता हूँ।" कह कर उसने चिड़े को खाने के लिये अपना मुँह खोला तो वह चिड़ा उड़ कर उसके सिर पर बैठ गया।

भेड़िये ने उसको पकड़ने की बहुत कोशिश की पर वह चिड़ा इधर उधर उड़ता रहा। फिर वह एक पेड़ पर बैठ गया, एक शाख से दूसरी शाख पर फुदकता रहा पर उसके हाथ नहीं आया।

वह फिर भेड़िये के सिर पर आ बैठा, फिर वह उसकी पूँछ पर चला गया। इस तरह वह भेड़िये को तब तक नचाता रहा जब तक कि वह भेड़िया पूरी तरह से थक नहीं गया।

उसी समय भेड़िये को एक स्त्री आती दिखायी दी जिसके सिर पर खाने की एक टोकरी रखी थी। वह खाना वह अपने पति के लिये ले जा रही थी।

उसको देख कर चिड़े ने भेड़िये से कहा — "अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हारे लिये नूडिल्स और मॉस का बहुत ही बढ़िया खाने का इन्तजाम कर सकता हूँ जो वह स्त्री ले कर आ रही है।

जैसे ही वह मुझे देखेगी वह मुझे पकड़ने की कोशिश करेगी। मैं उड़ जाऊँगा और एक शाख से दूसरी शाख पर फुदकता रहूँगा। वह अपनी टोकरी नीचे रख देगी और मेरे पीछे दौड़ेगी। तब तुम उसका सारा खाना ले लेना और खा लेना।"

और फिर ऐसा ही हुआ। वह स्त्री जब वहाँ आयी तो उसकी निगाह उस सुन्दर चिड़े पर पड़ी तो वह तुरन्त ही उसको पकड़ने के लिये उसके पीछे भागी।

चिड़ा वहाँ से उड़ कर थोड़ी दूर बैठ गया तो उसने अपनी खाने की टोकरी तो नीचे रख दी और फिर उस चिड़े के पीछे भागी।

बस भेड़िये को मौका मिल गया। वह भी तुरन्त ही उस टोकरी के पास गया और उसने उस टोकरी में से खाना खाना शुरू कर दिया।

भेड़िये को अपना खाना खाते देख कर वह स्त्री चिल्लायी — "अरे कोई मेरी सहायता करो। यह भेड़िया मेरा खाना खा रहा है।"

उसकी चिल्लाहट सुनते ही उसकी सहायता के लिये वहाँ बहुत सारे किसान अपने अपने डंडे और बड़े बड़े चाकू ले कर आ गये। वे सब उस भेड़िये पर टूट पड़े और उसे तुरन्त ही मार दिया।

उसके मरते ही उसके पेट में से क्रिस्टल मुर्गा, क्रिस्टल मुर्गी, काउन्टैस हंसिनी और ऐबैस बतख सब निकल पड़े। वे सब फिर से पीले चिड़े को साथ ले कर हँसते गाते बातें करते टौम थम्ब की शादी में चल दिये।

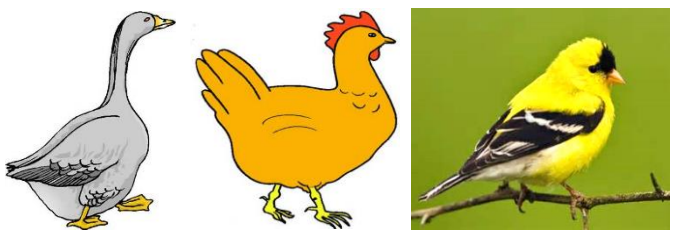

12 भेड़िया और तीन लड़कियाँ[29]

मैं तो तुझे खाऊँगा जैसी लोक कथाओं में यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार तीन लड़कियाँ एक ही शहर में काम करती थीं। एक दिन उनको खबर मिली कि उनकी माँ जो बोरगोफ़ोर्ट[30] में रहती थी बहुत बीमार थी।

सो सबसे बड़ी बहिन ने दो टोकरी में चार शराब की बोतलें रखीं और चार केक रखीं और अपनी माँ को देखने के लिये बोरगोफ़ोर्ट की तरफ रवाना हो गयी।

रास्ते में उसको एक भेड़िया मिला। उसने उससे पूछा — "तुम इतनी जल्दी में कहाँ भागी जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूँ अपनी माँ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"उन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतलें शराब की और चार केक।"

[29] The Wolf and the Three Girls – a folktale from Italy from its Lake of Garda area.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[30] Borgafort – a place in Italy

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूँ तो मैं तुमको खा जाऊँगा।" लड़की ने वे सब चीज़ें उसको दे दीं और भागती हुई अपनी बहिनों के घर चली गयी।

उसके बाद बीच वाली बहिन ने अपनी टोकरियाँ भरीं और वह भी अपनी माँ को देखने के लिये बोरगाफ़ोर्ट की तरफ चल दी। रास्ते में उसको भी भेड़िया मिला।

उसने उससे भी वही पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी तुम कहाँ जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूँ अपनी माँ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"इन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतल शराब है और चार केक हैं।"

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूँ तो मैं तुमको खा जाऊँगा।" लड़की ने उसके सामने अपनी टोकरियाँ खाली कर दीं और भागती हुई घर चली गयी।

अब सबसे छोटी बहिन ने कहा — "अब मेरी बारी है। मैं देखती हूँ उस भेड़िये को।"

उसने भी शराब और केक की टोकरियाँ तैयार कीं और बोरगाफ़ोर्ट की तरफ रवाना हो गयी। लो भेड़िया तो रास्ते में ही खड़ा था।

उसने उससे भी पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी कहाँ जा रही हो?"

"मैं बोरगाफ़ोर्ट जा रही हूँ अपनी माँ को देखने के लिये। वह बहुत बीमार है।"

"और इन टोकरियों में क्या है?"

"चार बोतल शराब और चार केक।"

"उनको मुझे दे दो वरना... अगर मैं सीधी बात कहूँ तो मैं तुमको खा जाऊँगा।"

"हाँ हाँ क्यों नहीं। लो अपना मुँह खोलो।"

भेड़िये ने केक खाने के लिये अपना मुँह खोल दिया।

छोटी लड़की ने एक केक उठायी और उसे भेड़िये के खुले हुए मुँह की तरफ फेंक दी। उसने वह केक खास कर के उस भेड़िये के लिये ही बनायी थी और उसे कीलों से भर दिया था।

भेड़िये ने वह केक अपने मुँह में पकड़ ली और जैसे ही उसने उसको काटा उसके मुँह का तलवा कीलों से जख्मी हो गया।

उसने तुरन्त ही वह केक थूक दिया, पीछे की तरफ कूदा और यह चिल्लाते हुए भाग गया — "तुमको इसकी कीमत देनी पड़ेगी ओ लड़की। तुमने मेरे साथ धोखा किया है।"

वह भेड़िया छोटा वाला रास्ता ले कर जो केवल उसी को ही मालूम था आगे आगे भाग गया और उस लड़की से पहले ही बोरगाफ़ोर्ट में उसकी माँ के घर पहुँच गया।

वह उस छोटी लड़की की बीमार मॉ के घर में घुस गया और उसकी मॉ को खा कर उसके बिस्तर में लेट गया।

वह छोटी लड़की जब अपनी मॉ के घर में आयी तो उसने अपनी मॉ को एक चादर से ऑखों तक ढके लेटे पाया।

वह बोली — "मॉ तुम इतनी काली कैसे हो गयी हो?"

भेड़िया बोला — "मेरे बच्चे, क्योंकि मैं इतनी बीमार जो थी।"

"तुम्हारा सिर भी कितना बड़ा हो गया है मॉ।"

"क्योंकि मुझको चिन्ता बहुत थी, मेरे बच्चे।"

लड़की बोली — "मैं तुम्हारे गले लगना चाहती हूँ मॉ।"

"हॉ हॉ बेटी क्यों नहीं।"

और जैसे ही वह लड़की अपनी मॉ को गले लगाने के लिये आगे बढ़ी कि भेड़िया उसको भी सारा का सारा खा गया।

अब उस लड़की और उसकी मॉ को अपने पेट में लिये वह भेड़िया वहॉ से घर के बाहर की तरफ भागा। पर गॉव के लोगों ने उसको उस घर में से भागते देख लिया सो उन्होंने सोचा कि "यह भेड़िया इस घर में से क्यों भाग रहा है जरूर दाल में कुछ काला है।

सो वे सब अपनी अपनी कुल्हाड़ियॉ और फावड़े उठा कर उसके पीछे दौड़े।

उन्होंने उस भेड़िये को मार कर और उसका पेट फाड़ कर उस लड़की और उसकी मॉ दोनों को उसके पेट में से बाहर निकाल लिया। वे अभी तक ज़िन्दा थीं।

बाद में उन लड़कियों की माँ ठीक हो गयी और वह छोटी लड़की अपने घर वापस चली गयी। जा कर उसने अपनी बहिनों से कहा — "देखो मैं सुरक्षित वापस आ गयी।"

13 गीदड़ और शेर

मैं तो तुझे खाऊँगा की एक और कहानी। अब बच्चों भूख तो भूख ही होती है। उसको तो सन्तुष्ट करना ही पड़ता है।

इस कहानी में एक गीदड़ी[31] के पास सौ अक्ल हैं पर जब उनको काम में लाने का मौका आता है तो उसकी सब अक्लें गायब हो जाती हैं। तब उसका पति गीदड़ अपनी केवल एक अक्ल से ही काम निकल लेता है।

एक बार एक गीदड़ और उसकी पत्नी गीदड़ी शाम को नदी के किनारे टहल रहे थे। गीदड़ी को अपनी अक्लमन्दी पर बहुत घमंड था और वह गीदड़ को बिल्कुल बेवकूफ समझती थी।

जब भी कभी अक्लमन्दी की बात आती तो गीदड़ी बड़े घमंड से कहती "मेरे पास सौ अक्ल हैं।"

और गीदड़ बेचारा मुँह लटका कर कहता "मेरे पास तो केवल एक ही अक्ल है गीदड़ी रानी।"

घूमते घूमते वे लोग बहुत सारी बातें कर रहे थे, अपने बच्चों की, अपने आने वाले दिनों की, अपने बूढ़े माता पिता की।

साथ में वे इधर उधर भी देखते जा रहे थे कि तभी उन्होंने शेर की दहाड़ की आवाज सुनी। शेर की दहाड़ सुनते ही गीदड़ी कॉप गयी।

---

[31] Female jackal

उसने गीदड़ से पूछा — "प्रिय, क्या तुमने भी वही सुना जो मैंने सुना?"

गीदड़ भी उस आवाज को सुन कर डर गया था। कॉपते हुए वह बोला — "हॉ गीदड़ी रानी, मैंने भी वह सुना जो तुमने सुना।"

पर वे लोग रुके नहीं और उन्होंने अपना घूमना जारी रखा।

इतने में उन्होंने शेर की दहाड़ दोबारा सुनी। शेर की दहाड़ दोबारा सुन कर तो गीदड़ी बहुत ही घबरा गयी। उसने अपने पति से शेर से बचने की कोई तरकीब सोचने के लिये कहा।

गीदड़ मरी सी आवाज में बोला — "मेरे पास तो केवल एक ही अक्ल है प्रिये, मैं क्या कर सकता हूँ? तुम्हारे पास तो सौ अक्ल हैं तुम ही कोई तरकीब सोचो।"

इस बीच उन्होंने शेर की फिर एक दहाड़ सुनी। इस बार वह दहाड़ उनको कहीं पास से ही आती सुनायी दी।

गीदड़ी तो उसको सुन कर बहुत जोर से कॉपने लगी और बोली — "प्रिये, मेरी पच्चीस अक्लों ने तो काम करना तभी बन्द कर दिया था जब मैंने शेर की पहली दहाड़ सुनी थी।

मेरी दूसरी पच्चीस अक्लों ने काम करना तब बन्द कर दिया था जब मैंने उसकी दूसरी दहाड़ सुनी थी और बाकी पच्चीस अक्लों ने काम करना अब बन्द कर दिया है।

अब मेरे पास जो केवल पच्चीस अक्ल बची हैं उन्हीं को काम में लाने की कोशिश करती हूँ। तब तक तुम भी कुछ सोचो।"

गीदड़ ने कोई जवाब नहीं दिया और अपना घूमना जारी रखा।

तभी उन्होंने एक और दहाड़ सुनी और लो वह दहाड़ तो उनके सामने से ही आ रही थी। अब तो शेर उनके सामने ही खड़ा था।

गीदड़ी तो उसको देख कर गिरते गिरते बची। डर के मारे वह गीदड़ से चिपक कर खड़ी हो गयी।

उसने गीदड़ का हाथ पकड़ते हुए कहा — "प्रिय, मेरी तो बाकी बची पच्चीस अक्ल भी चली गयीं अब मैं कुछ नहीं सोच सकती।"

और यह कहते हुए वह अपने पति के और पीछे दुबक गयी।

गीदड़ बोला — "अच्छा तो फिर मैं ही कुछ सोचता हूँ।"

इतने में शेर उनके पास आ कर बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ ओ गीदड़। मैं तुम दोनों को खाना चाहता हूँ।"

गीदड़ ने उसे इज़्ज़त से सिर झुका कर सलाम किया और सबसे पहले उसके परिवार की कुशलता के बारे में पूछा।

गीदड़ फिर बोला — "क्यों नहीं क्यों नहीं। हम तो आपकी प्रजा हैं और आपकी सेवा में हमेशा ही हाजिर हैं पर हम तो बहुत ही पतले दुबले से हैं। हमको खा कर आपका पेट नहीं भरेगा।

हमारे मोटे मोटे पॉच बच्चे हमारे घर में हैं। अगर आप हुक्म करें तो घर जा कर हम उनको यहॉ ले आयें ताकि उनको भी आपकी सेवा का मौका मिले।

इस तरह से उनको भी आपकी सेवा का मौका मिल जायेगा और हम सबको खा कर आपका पेट भी भर जायेगा।"

शेर तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उसने तुरन्त ही गीदड़ को उन बच्चों को लाने के लिये उनके घर भेज दिया।

गीदड़ी ने भी शेर को इज़्ज़त से सिर झुका कर सलाम किया और गीदड़ और गीदड़ी दोनों कुछ दूर तक तेज़ तेज़ चल कर वहॉ से चले गये।

जब शेर उनकी ऑख से ओझल हो गया तो वे फिर नदी के किनारे पर पहले की तरह घूमने लगे।

शेर उनका बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर फिर जब वे वहॉ नहीं आये तो वह भी वहॉ से चला गया।

इस घटना के बाद गीदड़ी ने न तो कभी अपनी अक्लमन्दी की शान बघारी और न ही कभी अपने पति को बेवकूफ कहा।

14 एक भयानक सूअर[32]

यों तो सूअर की बहुत सारी कहानियाँ हैं लेकिन क्या तुमको पता है कि सूअर चीन के लोगों के एक साल का निशान भी है – "ब्राउन अर्थ पिग"[33] और यह निशान है एक मादा सूअर का।[34]

तो लो पढ़ो यह कहानी मैं तो तुझे खाऊँगा के अनतर्गत उस सूअर की जो चीन के कैलेन्डर से सम्बन्धित है।

एक बार की बात है कि एक बुढ़िया अपनी पोती के साथ रहती थी। एक दिन वे जंगल में आग के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी करने गयीं। वहाँ उनको एक ताजा गन्ना भी मिल गया तो और लकड़ियों के साथ उन्होंने उसको भी उठा कर अपनी चुनी हुई लकड़ियों के साथ रख लिया।

---

[32] Dreadful Boar – a folktale from China, Asia. By Adele M Fielde in his "Chinese Fairy Tales". Taken from the Web Site : http://www.storytellingresearchlois.com/search/label/Chinese%20folklore

[33] "Brown Earth Pig"

[34] Pig is the last animal sign of 12 Earthly Branches. Pig is in the Water Group in the theory of Chinese Five Element Theory. Pig has wisdom, initiative and energy. Pig is not lazy. Pig Month is November, the first month of the winter. So Pig is the cold water in the winter. In Chinese I-Ching, Water is connected to the danger. When river water is overflowing, it might cause flooding. The sign of Pig is offensive and encroachment. Pig contains mainly Yang Water with some Yang Wood. Yang Wood is related to tall tree, landmark, boss or leader. The characteristics of Pig are kind, generous, magnanimous, warm-hearted and considerate with Leadership skill.

उसी समय उसको एक एल्फ़[35] मिल गया जो उस समय एक जंगली सूअर के रूप में था। उसने बुढ़िया से एक गन्ना माँगा पर बुढ़िया ने उसे उसको यह कह कर देने से मना कर दिया कि उसकी उम्र में नीचे झुकना और फिर उसे उठा कर उठना ठीक नहीं है।

वह अपना गन्ना घर ले कर जा रही है। वह चाहती है कि उसकी पोती यह गन्ना चूसे।

बुढ़िया से मना सुन कर सूअर गुस्सा हो गया उसने कहा कि वह अगली रात आ कर गन्ने की जगह बुढ़िया की पोती को खा जायेगा और यह कह कर जंगल चला गया।

बुढ़िया जब अपने केबिन पहुँची तो वह दरवाजे के पास बैठ कर ज़ोर ज़ोर से रोने लगी क्योंकि वह जानती थी कि उसके पास जंगली सूअर से बचने का कोई तरीका नहीं था।

जब वह बैठी बैठी रो रही थी तभी वहाँ से एक सुई बेचने वाला जा रहा था। उसने बुढ़िया से पूछा कि वह क्यों रो रही थी। सुई बेचने वाले ने कहा कि मैं आपके लिये बस इतना कर सकता हूँ कि मैं आपको एक डिब्बा सुइयों का दे दूँ। उसने ऐसा ही किया और वहाँ से चला गया।

[35] Elf a supernatural creature of folk tales, typically represented as a small, elusive figure in human form with pointed ears, magical powers, and a capricious nature.

बुढ़िया ने वे सुइयॉ अपने घर के दरवाजे के बाहर की तरफ उसके नीचे वाले आधे हिस्से में लगा दीं। यह कर के वह फिर रोने लगी। उसी समय एक आदमी टोकरी भर के केंकड़े लिये जा रहा था। उसने भी बुढ़िया का रोना सुना उसने भी उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी।

उसने केंकड़े वाले को बता दिया तो केंकड़े वाला बोला कि वह उसके लिये कुछ नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि मैं अपने आधे केंकड़े आपको दे दूँ। यह कह कर उसने अपने आधे केंकड़े बुढ़िया को दे दिये और चला गया।

बुढ़िया ने वे केंकड़े एक चीनी के बर्तन में रख दिये। चीनी का बर्तन दरवाजे के पीछे रख दिया और उसने फिर से रोना शुरू कर दिया।

जल्दी ही एक किसान अपने बैल के साथ अपने खेत से वापस आता हुआ वहॉ से गुजरा तो उसने भी बुढ़िया से पूछा कि वह क्यों रो रही थी। बुढ़िया ने उसे भी अपनी दुखभरी कहानी सुना दी।

उसकी कहानी सुन कर किसान बोला "मैं आपकी मुसीबत से आपको छुटकारा दिलाने के लिये आपके लिये इससे ज़्यादा कुछ नहीं कर सकता कि मैं आपके लिये रात भर के लिये यह बैल आपके पास छोड़ जाऊँ। इस तरह से कम से कम यह अपके अकेलेपन में आपके साथ रहेगा। उसने अपना बैल बुढ़िया के पास छोड़ा और वहॉ से चला गया।

बुढ़िया बैल को अपने केबिन में ले गयी और उसको अपने बिस्तर के सिरहाने बॉध दिया। उसको खाने के लिये कुछ भूसा दे कर वह फिर बाहर आ कर रोने लगी।

तभी एक हरकारा पास के शहर से अपने घोड़े पर सवार हो कर लौट रहा था कि वह उसके केबिन के सामने से गुजरा। उसने भी बुढ़िया को वहॉ रोते देखा तो उसने भी उससे पूछ लिया कि वह क्यों रो रही थी। उसने हरकारे को भी अपनी कहानी सुना दी।

हरकारा भी सुन कर परेशान हो गया कि वह उस बुढ़िया की सहायता कैसे करे फिर कुछ सोच कर बोला — "मुझे पता नहीं कि मैं आपके इस दुख में आपकी सहायता कैसे करूँ पर मैं यह घोड़ा आपके पास छोड़े जाता हूँ ताकि आपको सन्तुष्टि रहे।"

वह अपना घोड़ा छोड़ कर वहॉ से चला गया। उसने उस घोड़े को अन्दर ले जा कर अपने बिस्तर के पायताने बॉध दिया और सोचने लगी कि वह नीच अब उसके घर कैसे आयेगा। वह फिर से रोने लगी।

तभी एक लड़का अपने एक कछुए के साथ वहॉ आ गया जो उसने अभी अभी पकड़ा था। उसने बुढ़िया को रोते देखा तो उसने भी उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी। बुढ़िया ने उसको भी अपनी दुखभरी कहानी सुना दी। लड़का बोला — "आत्माओं से बचने का तो कोई तरीका नहीं हॉ मैं अपना यह कछुआ आपके पास छोड़ जाता हूँ।"

बुढ़िया ने उसका कछुआ लिया और उसको अपने बिस्तर के सामने बॉध दिया और बाहर आ कर फिर रोने लगी।

लड़के के बाद कुछ लोग चक्की लिये उधर से गुजरे और बुढ़िया से उसकी परेशानी के बारे में पूछा तो बुढ़िया ने उनको भी सब बता दिया।

उन्होंने भी कहा कि वे उसकी कोई सहायता नहीं कर सकते थे सिवाय इसके कि वे अपनी एक चक्की उसके पास छोड़ जायें। उन्होंने वह चक्की उसके घर के पीछे खिसका दी और चले गये।

बुढ़िया फिर घर के सामने बैठ कर रोने लगी। अबकी बार एक आदमी कुछ हल और कुल्हाड़ियॉ ले कर जा रहा था। उसने भी बुढ़िया को रोते देखा तो पूछा कि वह क्यों रो रही थी। उसकी दुखभरी कहानी सुन कर वह बोला कि मैं आपकी सहायता जरूर करता पर मैं तो केवल एक कुँआ खोदने वाला हूँ आपके लिये एक कुँआ खोद सकता हूँ।

बुढ़िया ने घर के पीछे उसको एक जगह दिखा दी तो वह वहॉ गया और जल्दी से एक कुँआ खोद दिया।

उसके जाने के बाद बुढ़िया फिर से रोने बैठ गयी। फिर एक कागज बेचने वाला आया और उससे पूछा कि वह क्यों रो रही थी। बुढ़िया ने उसे बताया तो उसने उसको एक बहुत बड़ा सफेद कागज दे दिया। बुढ़िया ने उस कागज को सावधानी से कुँए के मुँह पर बिछा दिया।

रात आयी। बुढ़िया ने अपने केबिन का दरवाजा बन्द किया। अपनी पोती को बिस्तर के दीवार की तरफ वाले हिस्से में सुला दिया। खुद वह उसके पास लेट कर अपने दुश्मन का इन्तजार करने लगी।

आधी रात को सूअर आया और दरवाजे को खोलने के लिये उसमें अपने शरीर से धक्का मारा तो वहाँ लगीं सुइयों से उसका शरीर घायल हो गया।

सो जब वह घर के अन्दर घुसा तो उसको बहुत गर्मी लग रही थी और प्यास लग रही थी तो वह पानी के बर्तन के पास पानी पीने के लिये गया।

जैसे ही उसने अपनी थूथनी पानी पीने के लिये उसमें डाली तो केंकड़ों ने उसे काट लिया। वे उसके बालों पर चिपक गये और उसके कानों को नोचने लगे। उनको हटाने के लिये वह बेचारा जमीन पर लोटने लगा।

गुस्से के मारे वह बिस्तर की तरफ बढ़ा तो बिस्तर के सामने पहुँचते ही कछुए ने अपनी पूँछ उसे मार कर उसे पीछे जाने पर मजबूर कर दिया जिससे वह घोड़े के पैरों के पास पहुँच गया।

घोड़े ने उसको एक ठोकर मारी तो वह बैल के पास पहुँच गया। बैल ने उसे फिर से घोड़े की तरफ उछाल दिया। इस बीच वह वहाँ से बच निकलने में कामयाब हो गया। वह आराम करने के

लिये और इन हालातों पर सोचने के लिये सीधा केबिन के पीछे की तरफ भाग गया।

वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो एक साफ सफेद कागज बिछा हुआ है तो वह उसको देखने में बहुत अच्छा लगा। वह जा कर उस पर बैठ गया। पर यह क्या जैसे ही वह उसके ऊपर पहुँचा तो वह तो कुँए में गिर गया।

बुढ़िया ने उसके कुँए में गिरने की आवाज सुन ली तो वह तुरन्त भाग कर आयी और चक्की को उस कुँए में धकेल दिया। इससे वह कुचल कर मर गया।

यह कहा जाता है कि बिखरे हुए दूध पर क्या रोना। पर बुढ़िया का रोना तो काम कर गया। यह ठीक है कि उसको सूअर को खाने को नहीं मिला पर सूअर को उसकी बेटी भी तो खाने को नहीं मिली।

15 तीन बड़े खरगोश[36]

एक बड़ी खरगोश[37] माँ के तीन बड़े खरगोश बच्चे थे जो अभी एक महीने के ही थे। वे अपने माता पिता के साथ एक गहरे और तंग बिल में रहते थे।

एक दिन बड़ी खरगोश माँ अपने बच्चों से बोली — "प्यारे बच्चो, तुम्हारे पिता ने और मैंने आपस में बात कर ली है अब तुम लोगों को यह घर छोड़ कर अपना घर बसाना चाहिये। सुनो तुम्हारे पिता तुमसे क्या कहना चाहते हैं।"

पिता बड़ा खरगोश बोला — "जब तुम यहाँ से जाओ तो इस घर की तरह से ही अपना एक घर बनाना। उसको बहुत गहरा और तंग खोदना जैसा कि हमारा है। एक गहरा बिल जिसका रास्ता टेढ़ा मेढ़ा हो। वह टेढ़ा मेढ़ा रास्ता तुमको तुम्हारे दुश्मनों से सुरक्षित रखेगा।"

तीनो बड़े खरगोश यह सुन कर वहाँ से चल दिये।

पहला बड़ा खरगोश माता पिता की बात बिल्कुल सुनना नहीं चाहता था। उसने सोचा — "मैं जमीन में उतने गहरे नहीं रहना

---

[36] The Three Hares – a folktale from Turkey, Europe. Translated from http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=146
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[37] Translated for the word "Hare". Hare is bigger than an ordinary rabbit.

चाहता मैं तो अपना घर जंगल में बनाऊँगा जो जमीन के ऊपर होगा और जहाँ ताजा हवा और रोशनी आयेगी।"

फिर उसने वैसा ही किया जैसा उसने सोचा था। उसने बहुत सारी डंडियाँ और पत्ते और झाड़ियाँ और घास इकट्ठे किये और उनसे अपने लिये एक घर बनाया।

यह सब काम कर के उसको भूख लग आयी तो वह खाना ढूँढने के लिये घास के मैदान में गया। पर वहाँ घास के मैदान में वह अकेला ही नहीं था उसके साथ कोई और भी था और वह था भूखा लोमड़ा।

लोमड़ा बोला — "यहाँ आओ, हम खाना एक साथ खायेंगे। मैं तुमको खाऊँगा।"

यह सुन कर वह बड़ा खरगोश तुरन्त ही वहाँ से अपने घर की तरफ भाग गया और जा कर अपने घर में छिप गया पर लोमड़े ने उसका पीछा किया और उसका घर तोड़ दिया और उसको खा गया।

उस छोटे बड़े खरगोश ने अपने माता पिता की बात नहीं सुनी और इस तरह से उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

दूसरे छोटे बड़े खरगोश ने भी यही सोचा — "मुझे जमीन के भीतर रहना अच्छा नहीं लगता। मैं अपना घर जँगल में पेड़ों के बीच बनाऊँगा।"

उसको जंगल में एक बहुत बड़ा पेड़ मिल गया जिसकी बहुत सारी बड़ी बड़ी जड़ें इधर उधर फैली हुई थीं। उसको वहाँ अच्छा लगा सो उसने अपना घर उन जड़ों के बीच में बना लिया।

उसका घर तिनकों और छोटी छोटी डंडियों का बना हुआ था। जब उसका घर बन गया तो वह भी थक गया और उसको भी भूख लग आयी सो वह भी पास के घास के मैदान में खाना खाने के लिये चला गया।

वही लोमड़ा उस मैदान में भी बैठा था। उसने उस बड़े खरगोश को देख कर कहा — "यहाँ आओ, हम खाना एक साथ खायेंगे। मैं तुमको खाऊँगा।"

यह सुन कर वह बड़ा खरगोश भी तुरन्त ही वहाँ से अपने घर भाग गया और जा कर जड़ों के बीच में तिनकों की छत के नीचे छिप गया पर लोमड़े ने उसका भी पीछा किया और उसका घर भी तोड़ दिया और उसको खा गया।

उस छोटे बड़े खरगोश ने भी अपने माता पिता की बात नहीं सुनी थी तो इस तरह उसको भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। बच्चों को अपने माता पिता की बात सुननी चाहिये। है न।

तीसरे छोटे खरगोश ने अपने माता पिता की बात सुनी और उसने अपना घर अपने माता पिता के घर के पास बनाया ताकि वह उनसे अक्सर मिलता जुलता रह सके।

उसने सोचा — "पिता जी ने हम लोगों को अपना बिल जमीन के नीचे गहरी जगह में खोदने को कहा था। मैं अपना घर अपने पुराने घर से भी गहरा खोदूँगा।" सो वह खोदता ही चला गया।

उसको अपना यह गहरा घर खोदते हुए काफी दिन लग गये। उसके घर में जाने का रास्ता उसके पुराने घर के रास्ते से भी ज्यादा लम्बा और ज्यादा गहरा था। उसने उसमें कई मोड़ बनाये ताकि दूसरे जानवर उसमें आसानी से न घुस सकें।

जब उसका बिल बन कर तैयार हो गया तो वह भी खाना खाने के लिये घास के मैदान में गया। वही लोमड़ा उसको भी वहाँ पर मिला।

जब उसने बड़े खरगोश को देखा तो बोला — "यहाँ आओ, हम खाना एक साथ खायेंगे। मैं तुमको खाऊँगा।"

यह सुन कर यह खरगोश भी तुरन्त ही वहाँ से अपने घर भाग गया। लोमड़ा उसके पीछे भागा पर वह बड़ा खरगोश जा कर जमीन के नीचे बनाये अपने घर में छिप गया।

लोमड़े ने उसके घर में घुसने की बहुत कोशिश की पर उस बच्चे बड़े खरगोश का घर इतना अच्छा बना हुआ था कि लोमड़ा उसके घर में न घुस सका।

वह बाहर बच्चे बड़े खरगोश का बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर फिर जब वह काफी देर तक न निकला तो वह चला गया।

उस छोटे खरगोश ने अपने माता पिता की बात सुनी तो वह बहुत सुखी रहा और अपने दुश्मनों से बचा रहा।

16 कायोटी और कछुआ[38]

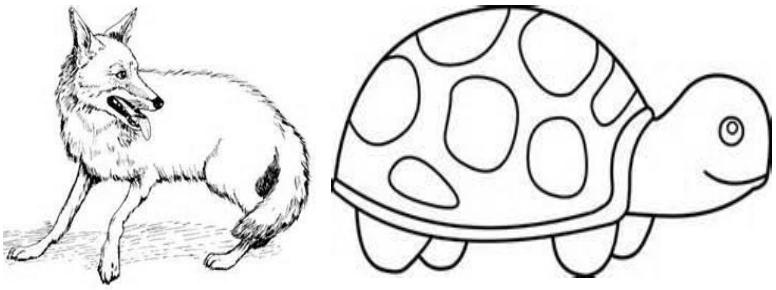

यह बहुत पहले की बात है कि एक सुबह जब जमीन कुछ सीली सीली सी थी और ठंडी थी एक कछुआ[39] नदी के किनारे से पास की जमीन पर मीठे मीठे पौधे खाने के लिये निकल गया।

बाद में उसको ऐसा लगा कि वह नदी से जितना ज़्यादा दूर जाता जा रहा था वे पौधे उतने ही ज़्यादा मीठे होते जा रहे थे। सो वह कछुआ मीठे पौधे खाते खाते नदी के किनारे से काफी दूर निकल गया और उसको समय का ख्याल ही नहीं रहा।

वह धीरे धीरे नदी से दूर जाता जा रहा था। उसको इस बात का भी ध्यान नहीं था कि सूरज जो सुबह केवल धरती के ऊपर से ही झॉक रहा था अब उसने सारी दुनियॉ को अपनी चपेट में ले लिया था।

---

[38] The Coyote and the Turtle – a story from Native Americans, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=9
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[39] Translated for the "Turtle". Turtles normally live in water and cannot live wthout it for a long time that is why they live near it and as soon as the Sunlight becomes strong they again enter the water.

अगर वह कछुआ ज़्यादा अक्लमन्द होता तो वह नदी के किनारे के पास ही ठहरता और वहीं घूमता। क्योंकि हर जानवर का बच्चा जानता है कि कछुए को क्या याद रखना चाहिये।

पानी के कछुओं को गीली जमीन में ही रहना चाहिये क्योंकि अगर वे ज़्यादा सूख जाते हैं तो उनके जोड़ अटक जाते हैं और फिर वे चल नहीं सकते। इसके अलावा अगर सूरज ज़्यादा ज़ोर से चमकता है तो उसकी गर्मी से वे मर भी जाते हैं।

सो वह कछुआ धीरे धीरे चला जा रहा था कि सूरज पहाड़ी के ऊपर तक आ गया और उसके सीधे ऊपर चमकने लगा। यह देख कर वह वापस घूमा और अपनी सुरक्षा के लिये नदी के किनारे की तरफ भागने लगा।

पर जैसा कि जानवरों के बच्चे आग के पास बैठ कर सीखते हैं कि पानी वाले कछुए तेज़ नहीं भाग सकते और यह तब ज़्यादा सच होता है जब कि वे पानी से बहुत देर तक बाहर रहे हों।

सो कछुआ क्योंकि पानी से काफी देर तक बाहर था वह भी तेज़ नहीं चल पा रहा था। वह बहुत धीरे चल रहा था और सूरज बहुत गर्म था।

कछुआ सूखा सूखा होता जा रहा था और वह धीरे और और धीरे चलता जा रहा था। आखिर वह एक ऐसी ऊँची जगह आ गया जहाँ से नदी दिखायी देती थी। वहाँ भी उसको सूरज की गर्मी बहुत लग रही थी।

कछुए को मालूम था कि थोड़ी ही देर में वह और नहीं चल पायेगा सो धूप से बचने के लिये वह छाया में चला गया और एक गड्ढे में घुस गया।

पर सूरज जैसे रोज करता है वैसे ही वह उस दिन भी कर रहा था। वह अपने जीवों को देखना चाहता था सो वह चलता ही रहा। जल्दी ही सूरज की धूप फिर से कछुए के ऊपर चमकने लगी। कछुआ बेचारा धीरे धीरे रोने लगा।

जब यह सब हो रहा था तो कायोटी[40] उधर से गुजर रहा था। क्योंकि कछुआ गड्ढे में था इसलिये कायोटी उसको देख तो नहीं पाया पर उसको कुछ ऐसी आवाज आयी जैसे कोई गा रहा हो।

हर जानवर का बच्चा आग के पास बैठ कर यह सीखता है कि कायोटी को गाना बहुत पसन्द है। उसको हर रात चॉद को देख कर गाते हुए देखा सुना जा सकता है – हालॉकि बहुत सारे लोग उसके गाने को उसका चिल्लाना बोलते हैं।

वह गाना सुन कर उसको लगा कि वह यह जाने कि वह कौन गा रहा था ताकि वह उसका नया गाना सीख सके सो उसने एक पत्थर के पीछे झॉका जहॉ वह सोच रहा था कि वहॉ से वह आवाज आ रही थी।

[40] Coyote, pronounced as Ka-yo-tee, is a small desert wolf. He is the hero of many Native Americans' folktales.

जब उसने उधर झाँका तो उसको कछुए के खोल का केवल ऊपरी हिस्सा दिखायी दिया। कायोटी ने उससे पूछा — "कछुए भाई, यह तुम कौन सा दुखी गाना गा रहे थे मुझे भी सिखाओ न।"

कछुए ने यह तो नहीं माना कि वह रो रहा था पर वह बोला कि मैं गाना नहीं गा रहा था।

कायोटी बोला — "नहीं, तुम गाना गा रहे थे। मैंने तुमको गाते हुए सुना और मैं तुम्हारा वाला गाना सीखना चाहता हूँ। अगर तुम मुझे अपना वाला गाना नहीं सिखाओगे तो मैं तुमको पूरा का पूरा खा जाऊँगा।"

कछुआ हालाँकि जानता था कि वह उसको खा सकता था पर फिर भी वह बोला — "तुम्हारा खाना मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता क्योंकि मैं अपने खोल के अन्दर चला जाऊँगा और मैं उसमें जा कर बैठ जाऊँगा।"

कायोटी फिर बोला — "अगर तुम मुझको वह दुख भरा गाना नहीं सुनाओगे और सिखाओगे तो मैं तुमको नदी में फेंक दूँगा।"

कछुआ चिल्लाया — "ओह कायोटी, मेहरबानी कर के मुझे नदी में मत फेंकना वरना मैं डूब जाऊँगा। मुझे नदी में नहीं फेंकना कायोटी।"

पर कायोटी तो इस बात पर कि कछुए ने अपना गाना उसको नहीं सिखाया इतना गुस्सा हुआ कि उसने कछुए को अपने मुँह में

पकड़ कर बहुत ज़ोर से हिलाया और नदी के सबसे गहरे हिस्से में फेंक दिया।

यही तो कछुआ चाहता था। कछुआ पानी के अन्दर तैरता रहा जहाँ कायोटी उसको कभी नहीं पकड़ सकता था।

कुछ देर बाद उसने अपना मुँह पानी के बाहर निकाला और बोला — "धन्यवाद कायोटी भाई, मुझे पानी में फेंकने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद।

क्योंकि यह तो मेरा घर है। मेरे पास तो यहाँ तक आने का कोई रास्ता ही नहीं था। तुमने मुझे यहाँ फेंक दिया अच्छा किया। मेरी इस सहायता के लिये तुम्हें बहुत बहुत धन्यवाद।"

यह सुन कर तो कायोटी और भी गुस्सा हुआ और पैर पटकता हुआ वहाँ से चला गया। एक तो वह कछुए से बेवकूफ बन गया था दूसरे वह उससे नया गाना भी नहीं सीख पाया था।

आज भी तुम कभी कभी कायोटी को नदी के पास झाड़ियों में कुछ सूँघते और गड्ढों में झाँकते पा सकते हो।

पर सब जानवरों के बच्चे आग के पास बैठ कर यह सीखते हैं कि कायोटी वहाँ क्या कर रहा है – कायोटी अभी भी कछुए से बदला लेने के लिये उसको वहाँ ढूँढ रहा है।

17 आदमी और सॉप[41]

पुराने समय में जंगली जानवर और घरेलू जानवर दोनों ही आदमी जैसे हुआ करते थे। दोनों ही एक ही भाषा में बातचीत भी किया करते थे। उनका एक लीडर हुआ करता था जिसको वे अपना सेक्रेटरी कहा करते थे।

उन दिनों एक लोमड़ा उनका सेक्रेटरी था। और यह लोमड़ा अपने घर में अकेला जानवरों से दूर रहा करता था। जब जानवरों में लड़ाई होती थी तो सब मिल कर इस सेक्रेटरी के पास जाते थे और यह सेक्रेटरी उनका फैसला कर दिया करता था।

एक दिन एक आदमी अकेला यात्रा पर निकला हुआ था। उन दिनों में आदमी भी जानवरों से बातें किया करते थे। सो जब वह जा रहा था तो उसे एक सॉप मिला।

वह सॉप उस समय कुछ परेशान सा पड़ा हुआ था। वह बेचारा हिल भी नहीं पा रहा था। पर आदमी तो मजबूत था। सो सॉप ने आदमी से कहा — "तुम तो जहॉ चाहे जा सकते हो पर मैं मजबूर हूँ। मेहरबानी कर के मुझे अपने साथ ले चलो।"

आदमी राजी हो गया और वह सॉप को उठा कर चल दिया। काफी देर चलने के बाद आदमी ने सॉप से कहा — "मैं अब थक

[41] The Man and the Snake – A Gumuz folktale from Ethiopia. Taken from http://ethiopianfolktales.com/en/benishangul-gumuz/86-the-man-and-the-snake

गया हूँ। हम लोग बहुत दूर निकल आये हैं। अब तुम यहाँ उतर जाओ और मैं तुम्हें यहाँ छोड़े देता हूँ।

इस बात पर उनमें झगड़ा हो गया। साँप का कहना था कि वह उसे अभी और आगे ले चले आदमी का कहना यह था कि वह उसे काफी दूर तक ले आया है अब वह थक गया है सो उसको अब नीचे उतर जाना चाहिये।

जब साँप नहीं मान रहा था तो आदमी ने कुछ ज़ोर से गुस्से में भर कर कहा — "उतरो नीचे।"

साँप ने धमकी दी — "मैं नीचे भी नहीं उतरूँगा और मैं तुमको काटूँगा भी।"

कह कर उसने अपना चेहरा आदमी के चेहरे की तरफ घुमा लिया और अपनी जीभ बाहर निकाल निकाल कर उसको काटने की धमकी देने लगा। आदमी यह देख कर बहुत डर गया पर फिर भी उसने उसको अपने सिर पर ही रखा रहने दिया और आगे चलता रहा।

आदमी ने सोचा कि क्यों न किसी जज के पास चला जाये जो इस बात का फैसला कर दे कि यह मेरे ऊपर ही लदा रहेगा या फिर कभी नीचे भी उतरेगा। सो फिर वे लोग जंगली जानवरों के पास गये। तो वहाँ जा कर साँप ने एक एक कर के उन सबको भी धमकी दी कि वह उनको काट लेगा।

इस धमकी से वे सब डर गये। इस लिये उसने एक अच्छा जज ढूँढने की जो उसकी तरफ अपनी राय देने की हिम्मत करे कोशिश की पर उसे कोई नहीं मिल सका।

आखिर वे एक ऐसे जानवर के पास आये जिसको आदमी जानता भी नहीं था। वह था लोमड़ा। आदमी को मालूम नहीं था कि वह जानवरों का सरदार था। सॉप अभी भी उसके गले में पड़ा हुआ था।

लोमड़े ने उसे इस तरह आते देखा तो हॅसा और बोला — "यह तुमने क्या शक्ल बना रखी है।"

आदमी बोला — "मैं इसको यहॉ अपनी गर्दन के चारों तरफ लपेटे हुए ही लाया हूँ क्योंकि जब भी मैं इससे उतर जाने के लिये कहता हूँ तो यह उतरता नहीं है।"

लोमड़ा बोला — "यह मामला तो बहुत आसान है। मैं तुम्हारा फैसला अभी करता हूँ। पहले तुम लोग नीचे बैठ जाओ।"

जब वे दोनों बैठ गये तो लोमड़ा बोला — "इससे पहले कि मैं अपने कोई फैसला सुनाऊँ मैं इस आदमी से यह जानना चाहता हूँ। हॉ आदमी अब तुम मुझे ठीक ठीक बताना। यह सॉप तुम्हारी गर्दन के चारों तरफ कैसे और कबसे लिपटा हुआ है। और हॉ पहले ओ सॉप तुम इसकी गर्दन से नीचे उतर जाओ तभी मैं कुछ बोल सकूँगा।"

सो सॉप आदमी की गर्दन से तुरन्त ही नीचे उतर गया और उसके बराबर में जा कर बैठ गया। जैसे ही सॉप आदमी के बराबर में जा कर बैठा लोमड़े ने आदमी से कहा "इसको डंडे से तुरन्त ही मार डालो।"

आदमी फुर्तीला था उसने तुरन्त ही अपने डडे से उस सॉप को वहीं का वहीं मार डाला।

आदमी इस तरह से अपने आपको सॉप से बचा देख कर लोमड़े से बोला — "मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। आपने मेरी जान बचा ली। मुझे अपनी सेवा करने का कुछ मौका दीजिये। मैं आपके लिये अभी एक बकरा या भेड़ ले कर आता हूँ। मेहरबानी कर के आप कहीं जाइयेगा नहीं। मैं आ कर आपको यहीं ढूँढ लूँगा।"

लोमड़ा अपनी भेंट के बारे में सुन कर बहुत खुश था। उसने कहा कि वह आदमी का यहीं इन्तजार करेगा। वह जल्दी से जसके लिये भेंट ले आये।

आदमी चालाक था वह अपना वायदा निभाना नहीं चाहता था। सो वह वहॉ से चला तो गया पर जब वह लौट कर आया तो वह अपनी शम्मा[42] में बजाय किसी भेड़ या बकरे के वह एक बड़ा सा कुत्ता छिपा कर ले आया।

[42] Schamma is the Ethiopian traditional dress which is worn both by male and female. It is normally made from white kind of thin cloth, embroidered on both of its width sides. See its picture above.

जब वह वहाँ आया तो कुत्ते को उसने लोमड़े के ऊपर बिठा दिया। अब कुत्ता तो लोमड़े का दुश्मन होता है सो लोमड़े के ऊपर बैठते ही उसने लोमड़े के गले में काट लिया और उसे मार दिया।

मरते मरते लोमड़ा बोला — "ओह यह आदमी भी कितना नीच है कि जिसने इसकी जान बचायी इसने उसी को मार दिया।"

List of Stories of “I Will Eat You”

1. Magical Pumpkin
2. The Singing Pumpkin
3. Nung Gwama
4. One Eye
5. Three Billy Goats Gruff
6. Snail and Leopard
7. The Tiger and the Frog
8. Lizard's Duel With Leopard
9. Uncle Wolf
10. The Hungry Wolf
11. Crystal Rooster
12. The Wolf and the Three Girls
13. Jackal and the Lion
14. A Dreadful Boar
15. The Three Hares
16. The Coyote and the Turtle
17. The Man and the Snake

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022